सत्यमेव जयते

भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CULTURE
NATIONAL MONUMENTS AUTHORITY

उरबासी द्वीप पर नक्काशी, शिलालेख और स्तंभ, स्थान-गुवाहाटी, जिला-कामरूप (अब कामरूप मेट्रो में), असम के लिए धरोहर उप-विधि

Heritage Bye-Laws for The carvings, inscriptions and pillar on the Urbasi Island, Locality-Guwahati, District–Kamrup (now in Kamrup Metro), Assam

उरबासी द्वीप पर नक्काशी, शिलालेख और स्तंभ, स्थान-गुवाहाटी, जिला- कामरूप (अब कामरूप मेट्रो में), असम के लिए धरोहर उप-विधि

Heritage Bye-Laws for The carvings, inscriptions and pillar on the Urbasi Island, Locality - Guwahati, District–Kamrup (now in Kamrup Metro), Assam

विषय – सूची

	अध्याय I **प्रारंभिक**	
1.1	संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ	1-2
1.2	परिभाषाएं	2-4
	अध्याय II **प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (एएमएएसआर) अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की पृष्ठभूमि**	
2.1	अधिनियम की पृष्ठभूमि	5
2.2	धरोहर उप-विधियों से संबंधित अधिनियम के उपबंध	5
2.3	आवेदक के अधिकार और जिम्मेदारियां	5-6
	अध्याय III **संरक्षित संस्मारक - उरबासी द्वीप पर नक्काशी, शिलालेख और स्तंभ, स्थान - गुवाहाटी, जिला-कामरूप (अब कामरूप मेट्रो में), असम का स्थान और अवस्थिति**	
3.1	संस्मारक का स्थान और अवस्थिति	7
3.2	संस्मारक की संरक्षित सीमा	7
	3.2.1 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अभिलेख के अधिसूचना मानचित्र/योजना	8
3.3	संस्मारक का इतिहास	8
3.4	संस्मारक का विवरण (वास्तुशिल्प विशेषताएँ, तत्व, सामग्री, आदि)	8
3.5	वर्तमान स्थिति	8
	3.5.1 संस्मारक की स्थिति-स्थिति का आकलन	9
	3.5.2 प्रतिदिन आने वाले लोगों की संख्या और कभी-कभी एकत्रित होने वाले लोगों की संख्या	9
	अध्याय IV **स्थानीय क्षेत्र विकास योजनाओं में मौजूदा ज़ोनिंग, यदि कोई हो**	
4.1	मौजूदा ज़ोनिंग	10
4.2	स्थानीय निकायों के मौजूदा दिशानिर्देश	10
	अध्याय V **प्रथम अनुसूची एवं सर्वेक्षण योजना के अनुसार सूचना**	
5.1	संस्मारक की सर्वेक्षण योजना	11
5.2	सर्वेक्षित आंकड़ो का विश्लेषण	11
	5.2.1 प्रतिषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र का विवरण	11

	5.2.2 निर्मित क्षेत्र का विवरण	11
	5.2.3 हरित/खुले स्थानों का विवरण	11-12
	5.2.4 परिसंचरण के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र - सड़कें, फुटपाथ आदि	12
	5.2.5 भवनों की मौजूदा ऊंचाई (क्षेत्र-वार)	12
	5.2.6 राज्य संरक्षित संस्मारक और सूचीबद्ध धरोहर भवन, यदि उपलब्ध हों	12
	5.2.7 सार्वजनिक सुविधाएं	12
	5.2.8 संस्मारक तक पहुंच	12
	5.2.9 अवसरंचनात्मक सेवाएं	12
	5.2.10 स्थानीय निकायों के दिशा-निर्देशों के अनुसार क्षेत्र का प्रस्तावित ज़ोनिंग	12
अध्याय VI संस्मारक का वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व		
6.1	संस्मारक का वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व	13
6.2	संस्मारक की संवेदनशीलता (अर्थात विकासात्मक दबाव, शहरीकरण, जनसंख्या दबाव, आदि)	13-14
6.3	संरक्षित संस्मारक या क्षेत्र से दृश्यता और विनियमित क्षेत्र से दृश्यता	14
6.4	पहचान किया जाने वाला भूमि उपयोग	14
6.5	संरक्षित संस्मारक के अलावा अन्य पुरातात्विक धरोहर	14
6.6	सांस्कृतिक परिदृश्य	14
6.7	महत्वपूर्ण प्राकृतिक परिदृश्य	14
6.8	खुली जगह और निर्माण का उपयोग	14
6.9	पारंपरिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ	15
6.10	संस्मारक और विनियमित क्षेत्रों से दिखाई देने वाला क्षितिज	15
6.11	पारंपरिक वास्तुकला	15
6.12	स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा यथा उपलब्ध विकास योजना	15
6.13	अनुमेय भवन संबंधी मापदंड	15
	6.13.1 मरम्मत एवं नवीनीकरण (प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र में)	16
	6.13.2 पुनर्निर्माण	16
	6.13.3 नया निर्माण	16-18
6.14	आगंतुक सुविधाएं और प्रसाधन	18
अध्याय VII स्थल विशिष्ट सिफारिशें		
7.1	स्थल विशिष्ट सिफ़ारिशें	19
7.2	अन्य सिफ़ारिशें	19

CONTENTS

CHAPTER I PRELIMINARY		
1.1	Short title, Extent and Commencements	20-21
1.2	Definitions	21-22
CHAPTER II Background of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act, 1958, as amended		
2.1	Background of the Act	23
2.2	Provision of the Act related to Heritage Bye-Laws	23
2.3	Rights and Responsibilities of Applicant	23-24
CHAPTER III Location and Setting of Protected Monument - The carvings, inscriptions and pillar on the Urbasi Island, Locality- Guwahati, District– Kamrup (now in Kamrup Metro), Assam		
3.1	Location and Setting of the Monument	25
3.2	Protected Boundary of the Monument	26
	3.2.1 Notification Map/ Plan as per ASI records	26
3.3	History of the Monument	26
3.4	Description of the Monument (architectural features, elements, materials etc.)	26
3.5	Current Status	26
	3.5.1 Condition of the Monument - condition assessment	26
	3.5.2 Daily footfalls and occasional gathering numbers	27
CHAPTER IV Existing Zoning, if any, in the Local Area Development Plans		
4.1	Existing Zoning	28
4.2	Existing Guidelines of the local bodies	28
CHAPTER V Information as per First Schedule and Survey Plan		
5.1	Survey Plan of the Monument	29
5.2	Analysis of surveyed data	29
	5.2.1 Prohibited Area and Regulated Area details	29
	5.2.2 Description of built up area	29
	5.2.3 Description of green/open spaces	29-30
	5.2.4 Area covered under circulation- roads, footpaths etc	30
	5.2.5 Heights of buildings (Zone wise)	30

	5.2.6 State Protected Monuments and listed Heritage Buildings	30
	5.2.7 Public amenities	30
	5.2.8 Access to Monument	30
	5.2.9 Infrastructure services	30
	5.2.10 Proposed zoning of the area as per Local Bodies	30
CHAPTER VI Architectural, Historical and Archaeological Value of the Monument		
6.1	Architectural, historical and archaeological value	31
6.2	Sensitivity of the Monument	31
6.3	Visibility from the Protected Monument or area and visibility from Regulated Area	31-32
6.4	Land-use to be identified	32
6.5	Archaeological heritage remains other than Protected Monument	32
6.6	Cultural landscapes	32
6.7	Significant natural landscapes	32
6.8	Usage of open space and constructions	32
6.9	Traditional, historical and cultural activities	32
6.10	Skyline as visible from the monument and from Regulated Areas	32
6.11	Traditional architecture	32
6.12	Developmental plan, as available, by the local authorities	33
6.13	Permissible Building related parameters	33
	6.13.1 Repair and Renovation (in Prohibited and Regulated Area)	33
	6.13.2 Reconstruction	33
	6.13.3 New Construction	34-35
6.14	Visitor facilities and amenities	35
CHAPTER VII Site Specific Recommendations		
7.1	Site Specific Recommendations	36
7.2	Other Recommendations	36

Annexure		
अनुलग्नक-I Annexure-I	संस्मारक - उरबासी द्वीप पर नक्काशी, शिलालेख और स्तंभ, स्थान- गुवाहाटी, जिला- कामरूप (अब कामरूप मेट्रो में), असम की सर्वेक्षण योजना Survey Plan of the Monument – of "The carvings, inscriptions and pillar on the Urbasi Island, Locality- Guwahati, District– Kamrup (now in Kamrup Metro), Assam"	37
अनुलग्नक-II Annexure-II	एएसआई रिकॉर्ड के अनुसार अधिसूचना मानचित्र - संरक्षण सीमाओं की परिभाषा Notification map as per ASI records - definition of Protection Boundaries	38
अनुलग्नक–III Annexure-III	स्थानीय निकायों के मौजूदा दिशानिर्देश Existing Guidelines of the local bodies	39-43
अनुलग्नक–IV Annexure-IV	स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा प्रदान की गई विकास योजना Development plan as provided by the local authorities	44-45
अनुलग्नक-V Annexure-V	संरक्षित संस्मारक और उसके आस-पास के चित्र Images of the Protected Monument and its Surroundings	46-49

भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (धरोहर उप-विधि विनिर्माण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम 2011 के नियम (22) के साथ पठित प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ङ द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, संरक्षित संस्मारक - **"उरबासी द्वीप पर नक्काशी, शिलालेख और स्तंभ, स्थान- गुवाहाटी, जिला-कामरूप (अब कामरूप मेट्रो में), असम**'' के लिए निम्नलिखित धरोहर उप-विधि जिन्हें, इनटैक नई दिल्ली के परामर्श से सक्षम प्राधिकारी द्वारा तैयार किया गया है, को राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (प्राधिकरण के अध्यक्ष और सदस्यों की सेवा शर्तें और कार्य प्रणाली), नियम, 2011 के नियम 18 के उप नियम 2 द्वारा यथा अपेक्षित जनता से आपत्ति या सुझाव आमंत्रित करने के लिए एतद्द्वारा 22.12.2022 को प्रकाशित किया गया था।

यथा विनिर्दिष्ट दिनांक से पहले प्राप्त आपत्ति/सुझावों पर सक्षम प्राधिकारी के परामर्श से राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण द्वारा विधिवत विचार किया गया है।

इसलिए, अब प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ङ की उप-धारा (5) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण, निम्नलिखित उप-विधि बनाता है, नामत:

"उरबासी द्वीप पर नक्काशी, शिलालेख और स्तंभ, स्थान-गुवाहाटी, जिला-कामरूप (अब कामरूप मेट्रो में), असम" के लिए धरोहर उप-विधि

अध्याय I
प्रारंभिक

1.1 संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ:-

(i) इन उप-विधियों को संरक्षित संस्मारक – **"उरबासी द्वीप पर नक्काशी, शिलालेख और स्तंभ, स्थान-गुवाहाटी, जिला-कामरूप (अब कामरूप मेट्रो में), असम"** के लिए राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण धरोहर उप-विधि, 2025 कहा जाएगा।

(ii) ये संस्मारक के सम्पूर्ण प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र तक लागू होंगी।

(iii)इन उप-विधियों के प्रावधान किसी भी अन्य उप-विधि में निहित असंगतता के बावजूद प्रभावी होंगे, चाहे इन उप-विधियों के प्रारंभ होने से पहले या बाद में बनाए गए हों, या किसी उप-विधि के आधार पर प्रभावी होने वाले किसी भी

दस्तावेज़ में हों। इन उप-विधियों को किसी अन्य उप-विधि के अनुरूप बनाने के लिए इनमें संशोधन करना अनिवार्य नहीं होगा।

(iv) ये अधिकारिक राजपत्र में उनके प्रकाशन की तिथि से प्रवृत्त होंगी।

1.2 परिभाषाएं:-

1. इन उप-विधियों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो, अधिनियम अथवा इसके तहत बनाए गए नियमों के तहत दिए अनुसार परिभाषाएं सुविधा की दृष्टि से यहां पुन: लिखी गई हैं:-

   (क) "प्राचीन संस्मारक" से कोई संरचना, रचना या संस्मारक, या कोई स्तूप या स्थान या दफ़नगाह या कोई गुफा, शैल-मूर्ति, शिला-लेख या एकाश्मक जो ऐतिहासिक, पुरातत्वीय या कलात्मक रुचि का है और जो कम से कम एक सौ वर्षों से विद्यमान है, अभिप्रेत है, और इसके अंतर्गत हैं -

   (i) किसी प्राचीन संस्मारक के अवशेष,

   (ii) किसी प्राचीन संस्मारक का स्थल,

   (iii) किसी प्राचीन संस्मारक के स्थल से लगी हुई भूमि का ऐसा भाग जो ऐसे संस्मारक को बाड़ से घेरने या आच्छादित करने या अन्यथा परिरक्षित करने के लिए अपेक्षित हो, तथा

   (iv) किसी प्राचीन संस्मारक तक पहुंचने और उसके सुविधाजनक निरीक्षण के साधन;

   (ख) "पुरातत्वीय स्थल और अवशेष" से कोई ऐसा क्षेत्र अभिप्रेत है, जिसमें ऐतिहासिक या पुरातत्वीय महत्व के ऐसे भग्नावशेष या अवशेष हैं या जिनके होने का युक्तियुक्त रूप से विश्वास किया जाता है, जो कम से कम एक सौ वर्षों से विद्यमान है, और इनके अंतर्गत हैं-

   (i) उस क्षेत्र से लगी हुई भूमि का ऐसा भाग जो उसे बाड़ से घेरने या आच्छादित करने या अन्यथा परिरक्षित करने के लिए अपेक्षित हो, तथा

   (ii) उस क्षेत्र तक पहुंचने और उसके सुविधाजनक निरीक्षण के साधन;

   (ग) "अधिनियम" से आशय प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, है;

(घ) "पुरातत्व अधिकारी" से भारत सरकार के पुरातत्व विभाग का कोई ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है, जो सहायक अधीक्षण पुरातत्वविद् से निम्नतर पद (श्रेणी) का नहीं है;

(ड.) "प्राधिकरण" से अधिनियम की धारा 20च के अधीन गठित राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण अभिप्रेत है;

(च) "सक्षम प्राधिकारी" से केंद्र सरकार या राज्य सरकार के पुरातत्व निदेशक या पुरातत्व आयुक्त की श्रेणी से नीचे न हो या समतुल्य श्रेणी का ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है, जो इस अधिनियम के अधीन कृत्यों का पालन करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, सक्षम प्राधिकारी के रूप में विनिर्दिष्ट किया गया हो:

बशर्ते कि केंद्र सरकार सरकारी राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, धारा 20ग, 20घ और 20ङ के प्रयोजन के लिए भिन्न भिन्न सक्षम प्राधिकारी विनिर्दिष्ट कर सकेगी;

(छ) "निर्माण" से किसी संरचना या भवन का कोई परिनिर्माण अभिप्रेत है, जिसके अंतर्गत उसमें ऊर्ध्वाकार या क्षैतिजीय कोई परिवर्धन या विस्तारण भी है, किन्तु इसके अंतर्गत किसी विद्यमान संरचना या भवन का कोई पुन:निर्माण, मरम्मत और नवीकरण या नालियों और जलनिकास सुविधाओं तथा सार्वजनिक शौचालयों, मूत्रालयों और इसी प्रकार की सुविधाओं का निर्माण, अनुरक्षण और सफाई या जनता के लिए जलापूर्ति की व्यवस्था करने के लिए आशयित सुविधाओं का निर्माण और अनुरक्षण या जनता के लिए विद्युत की आपूर्ति और वितरण के लिए निर्माण या अनुरक्षण, विस्तारण, प्रबंध या जनता के लिये इसी प्रकार की सुविधाओं के लिए व्यवस्था शामिल नहीं हैं;

(ज) "सरकार" से आशय भारत सरकार से है;

(झ) अपने व्याकरणिक रूपों और सजातीय पदों सहित "अनुरक्षण" के अंतर्गत हैं किसी संरक्षित संस्मारक को बाड़ से घेरना, उसे आच्छादित करना, उसकी मरम्मत करना, उसका पुनरूद्धार करना और उसकी सफाई करना, और कोई ऐसा कार्य करना जो किसी संरक्षित संस्मारक के परिरक्षण या उस तक सुविधाजनक पहुंच को सुनिश्चित करने के प्रयोजन के लिए आवश्यक है;

(ञ) "स्वामी" के अंतर्गत हैं-

(i) संयुक्त स्वामी जिसमें अपनी ओर से तथा अन्य संयुक्त स्वामियों की ओर से प्रबंध करने की शक्तियॉ निहित हैं और किसी ऐसे स्वामी के हक-उत्तराधिकारी, तथा

(ii) प्रबंध करने की शक्तियों का प्रयोग करने वाला कोई प्रबंधक या न्यासी और ऐसे किसी प्रबंधक या न्यासी का पद में उत्तराधिकारी;

(ट) "विहित" से इस अधिनियम के अधीन बनाए गए नियम अभिप्रेत है:

(ठ) "प्रतिषिद्ध क्षेत्र" से धारा 20क के अधीन प्रतिषिद्ध क्षेत्र के रूप में विनिर्दिष्ट क्षेत्र या घोषित किया गया कोई क्षेत्र अभिप्रेत है;

(ड) "संरक्षित क्षेत्र" से कोई ऐसा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अभिप्रेत है, जिसे इस अधिनियम के द्वारा या उसके अधीन राष्ट्रीय महत्व का होना घोषित किया गया है;

(ढ) "संरक्षित संस्मारक" से कोई ऐसा प्राचीन संस्मारक अभिप्रेत है, जिसे इस अधिनियम के द्वारा या उसके अधीन राष्ट्रीय महत्व का होना घोषित किया गया है;

(ण) "विनियमित क्षेत्र" से धारा 20ख के अधीन विनिर्दिष्ट या घोषित किया गया कोई क्षेत्र अभिप्रेत है;

(त) "पुन:निर्माण" से किसी संरचना या भवन का उसकी पूर्व विद्यमान संरचना में ऐसा कोई परिनिर्माण अभिप्रेत है, जिसकी क्षैतिजीय और ऊर्ध्वाकार सीमाएं समान हैं;

(थ) "मरम्मत और पुनरुद्धार" से किसी पूर्व विद्यमान संरचना या भवन के परिवर्तन अभिप्रेत हैं, किन्तु इसके अंतर्गत निर्माण या पुन:निर्माण नहीं होंगे।

2. इसमें प्रयुक्त और परिभाषित नहीं किए गए शब्दों और अभिव्यक्तियों का आशय वही अर्थ होगा जैसा अधिनियम अथवा इसके तहत बनाए गए नियमों में समनुदेशित किया गया है।

अध्याय II

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (एएमएएसआर) अधिनियम,1958, यथा संशोधित, की पृष्ठभूमि

2.1 अधिनियम की पृष्ठभूमि:

धरोहर उप-विधियों का उद्देश्य केंद्र सरकार द्वारा संरक्षित संस्मारकों की सभी दिशाओं में 300 मीटर के अंदर भौतिक, सामाजिक और आर्थिक दखल के बारे में मार्गदर्शन देना है। 300 मीटर के क्षेत्र को दो भागों में बॉटा गया है (i) **प्रतिषिद्ध क्षेत्र,** यह क्षेत्र संरक्षित क्षेत्र अथवा संरक्षित संस्मारक की सीमा से शुरू होकर सभी दिशाओं में 100 मीटर की दूरी तक फैला है और (ii) **विनियमित क्षेत्र,** यह क्षेत्र प्रतिषिद्ध क्षेत्र की सीमा से शुरू होकर सभी दिशाओं में 200 मीटर की दूरी तक फैला है।

अधिनियम के उपबंधों के अनुसार, कोई भी व्यक्ति संरक्षित क्षेत्र और प्रतिषिद्ध क्षेत्र में किसी प्रकार का निर्माण अथवा खनन का कार्य नहीं कर सकता जबकि ऐसा कोई भवन अथवा संरचना जो प्रतिषिद्ध क्षेत्र में 16 जून, 1992 से पूर्व मौजूद था अथवा जिसका निर्माण बाद में महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षणक्षण की अनुमति से हुआ था, विनियमित क्षेत्र में किसी भवन अथवा संरचना का निर्माण, पुन:निर्माण, मरम्मत अथवा पुनरुद्धार की अनुमति सक्षम प्राधिकारी से लेना अनिवार्य है।

2.2 धरोहर उप-विधियों से संबंधित अधिनियम के उपबंध:

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ङ और प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (धरोहर उप-विधियों का विनिर्माण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम 2011 के नियम 22 में संरक्षित संस्मारकों के लिए उप-विधि बनाना विनिर्दिष्ट है। नियम में धरोहर उप-विधि बनाने के लिए मापदंडों का प्रावधान है। राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (प्राधिकरण के अध्यक्ष और सदस्यों की सेवा शर्तें तथा कार्य निष्पादन) नियम, 2011, नियम 18 में प्राधिकरण द्वारा धरोहर उप-विधियों के अनुमोदन की प्रक्रिया विनिर्दिष्ट है।

2.3 आवेदक के अधिकार और जिम्मेदारियां:

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ग में प्रतिषिद्ध क्षेत्र में मरम्मत और पुनरुद्धार अथवा विनियमित क्षेत्र में निर्माण अथवा पुनर्निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण के लिए नीचे दिए गए विवरण के अनुसार आवेदन का ब्यौरा विनिर्दिष्ट है:

(क) कोई व्यक्ति जो किसी ऐसे भवन अथवा संरचना का स्वामी है जो 16 जून, 1992 से पहले प्रतिषिद्ध क्षेत्र में मौजूद था अथवा जिसका निर्माण इसके उपरांत महानिदेशक के अनुमोदन से हुआ था तथा जो ऐसे भवन अथवा संरचना का किसी प्रकार की मरम्मत अथवा नवीकरण का काम कराना चाहता है तो वह ऐसी मरम्मत और नवीकरण, जैसा भी स्थिति हो, को कराने के लिए सक्षम प्राधिकारी को आवेदन कर सकता है।

(ख) कोई व्यक्ति जो किसी विनियमित क्षेत्र में किसी भवन अथवा संरचना अथवा भूमि का स्वामी है और वह ऐसी भूमि पर ऐसे भवन अथवा संरचना अथवा का कोई निर्माण अथवा पुन:निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण जैसी भी स्थिति हो, करना चाहता है तो वह निर्माण अथवा पुन:निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण जैसी भी स्थिति हो, के लिए सक्षम प्राधिकारी को आवेदन कर सकता है।

(ग) सभी संबंधित सूचना प्रस्तुत करने तथा राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (प्राधिकरण के अध्यक्ष तथा सदस्यों की सेवा की शर्तें और कार्य संचालन) नियम, 2011 के अनुपालन की जिम्मेदारी आवेदक की होगी।

अध्याय III

संरक्षित संस्मारक - उरबासी द्वीप पर नक्काशी, शिलालेख और स्तंभ, स्थान - गुवाहाटी, जिला - कामरूप (अब कामरूप मेट्रो में), असम का स्थान और अवस्थिति

3.1 संस्मारक का स्थान और अवस्थिति:

संरक्षित संस्मारक-उरबासी द्वीप (वर्तमान में उरबासी द्वीप के रूप में जाना जाता है) उत्तरी गुवाहाटी के बरुआ सूक में ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिणी तट पर स्थित एक छोटा नदी द्वीप है।

इसके स्थान के भौगोलिक निर्देशांक हैं: **अक्षांश 26°11'38.2"N और देशांतर 91°44'41.8"E**.

संरक्षित संस्मारक तक उमानंद फेरी घाट से नाव द्वारा पहुंचा जा सकता है। ब्रह्मपुत्र नदी संरक्षित संस्मारक के चारों ओर बहती है, जिसके परिणामस्वरूप यह वर्ष के लगभग आधे समय नदी के पानी में डूबा रहता है।

गुवाहाटी बस स्टेशन संरक्षित संस्मारक से लगभग 11 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। गुवाहाटी रेलवे स्टेशन संरक्षित संस्मारक के 3 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है, जबकि लोकप्रिय गोपीनाथ बोरदोलोई अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, गुवाहाटी, पश्चिम में 27 किलोमीटर दूर है।

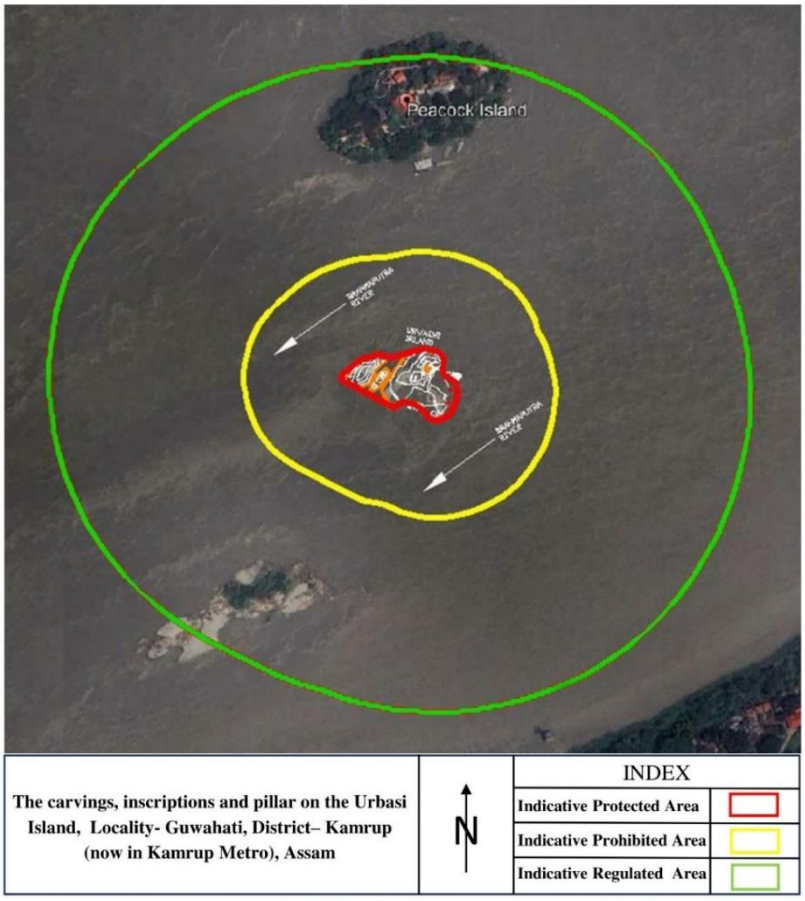

चित्र 1: "उरबासी द्वीप पर नक्काशी, शिलालेख और स्तंभ, गुवाहाटी, जिला - कामरूप (अब कामरूप मेट्रो में), असम" का स्थान दर्शाने वाला उपग्रह चित्र

3.2 संस्मारक की संरक्षित सीमा:

संरक्षित संस्मारक - ''उरबासी द्वीप पर नक्काशी, शिलालेख और स्तंभ, स्थान-गुवाहाटी, जिला-कामरूप (अब कामरूप मेट्रो में), असम'' की संरक्षित सीमा **अनुलग्नक–I** में देखी जा सकती है।

3.2.1 एएसआई रिकॉर्ड के अनुसार अधिसूचना मानचित्र/योजना:

''उरबासी द्वीप पर नक्काशी, शिलालेख और स्तंभ, स्थान-गुवाहाटी, जिला-कामरूप (अब कामरूप मेट्रो में), असम'' की राजपत्र अधिसूचना **अनुलग्नक-II** में देखी जा सकती है।

3.3 संस्मारक का इतिहास:

9वीं शताब्दी ई. के कालिकापुराण में कहा गया है कि उमानंद, उरबासी और कर्मनाशा के तीन द्वीपों ने मिलकर एक भूभाग बनाया जिसे भस्माचल के नाम से जाना जाता है, जिसके भीतर उरबासी कुंड मौजूद था। 16वीं शताब्दी ई. के योगिनी तंत्र में उल्लेख है कि एक प्राकृतिक आपदा के कारण ब्रह्मपुत्र द्वारा उरबासी कुंड को नष्ट कर दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप नदी की धारा धीमी हो गई और भस्माचल के तीन द्वीपों में विखंडित होने के कारण इसके मार्ग का विस्तार हुआ। इन तीनों द्वीपों के नाम ऐतिहासिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण हैं, जिनका लोगों पर गहरा धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव है। वे असम को भारतीय महाकाव्यों से जोड़ने वाले लोकप्रिय पौराणिक प्रसंगों से जुड़े हैं और राष्ट्रीय एकीकरण[1] के प्रेरक स्रोत के रूप में काम करते हैं।

3.4 संस्मारक का विवरण (वास्तुशिल्प विशेषताएँ, तत्व, सामग्री, आदि):

संरक्षित संस्मारक की चट्टानों पर बड़ी संख्या में मूर्तिकला, शिलालेख और आकृतियाँ हैं। सूर्य की छवियाँ, हाथ जोड़े हुए देवी, कमल के साथ शिव लिंग, नंदी और एक भक्त के साथ शिव, गणेश की बैठी हुई छवि, दो भक्तों के साथ विष्णु और दशावतार (विष्णु के दस अवतार) का एक पैनल चट्टानों पर खूबसूरती से उकेरा गया है। ब्राह्मी और नागरी लिपि में उत्कीर्ण दो अन्य शिलालेख भी हैं। कुछ नक्काशीदार संरेखण, शैल- कृत सोपान और छोटे छेद के निशान भी हैं, जो संभवतः लोहे के क्लैंप और लकड़ी के खंभों या कीलों के लिए थे। संरेखण, सोपान और छेद इस स्थल पर पहले के मंदिर के अस्तित्व का संकेत देते हैं। कमल के साथ शिव लिंग से पता चलता है कि मंदिर का गर्भगृह और मंडप था। इस मंदिर का अपसाइडल लेआउट प्रमुख रूप से दिखाई देता है और उत्तरी शैल- कृत सीढ़ियाँ अभी भी स्पष्ट रूप से दिखाई[2] देती हैं।

---

[1] भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (गुवाहाटी सर्किल)

[2] भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (गुवाहाटी सर्किल)

3.5 वर्तमान स्थिति:

3.5.1 संस्मारक की स्थिति - स्थिति आकलन:

संरक्षित संस्मारक का रखरखाव और संरक्षण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) का एकमात्र अधिकार क्षेत्र है। संरक्षित संस्मारक की वर्तमान स्थिति को दर्शाने वाले चित्र **अनुलग्नक-V** में संलग्न हैं।

3.5.2 प्रतिदिन आने वाले लोगों की संख्या और कभी-कभी एकत्रित होने वाले लोगों की संख्या:

संरक्षित स्मारक ब्रह्मपुत्र नदी के बीच में एक द्वीप है। अनुमानित रूप से इस द्वीप तक पहुँच सीमित है, खासकर बरसात के मौसम में। यह बताना उचित है कि उमानंद फेरी घाट से उमानंद द्वीप तक एक नौका सेवा है और आगंतुक अन्य मौसम[3] में इस नौका सेवा का उपयोग करके इस स्थल पर आते हैं।

[3] भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (गुवाहाटी सर्किल)

अध्याय IV

स्थानीय क्षेत्र विकास योजनाओं में मौजूदा ज़ोनिंग, यदि कोई हो

4.1 मौजूदा ज़ोनिंग:

गुवाहाटी महानगर क्षेत्र, 2025 के लिए व्यापक मास्टर प्लान में, संरक्षित स्मारक को इस प्रकार नामित किया गया है:

i. मौजूदा प्रमुख भूमि उपयोग मानचित्र में - स्मारक को "खुली जगह/मनोरंजन/खाली भूमि" के अंतर्गत रखा गया है, जिसे "खाली भूमि" के रूप में निर्दिष्ट किया गया है। **[अनुलग्नक-IV (क)]**

ii. प्रस्तावित भूमि उपयोग ज़ोनिंग योजना-2025 में - उरबासी द्वीप के विनियमित क्षेत्र में गुवाहाटी शहर और उत्तरी गुवाहाटी को जोड़ने के लिए एक हवाई रोपवे प्रस्तावित है **[अनुलग्नक-IV (ख)]**

4.2 स्थानीय निकायों के मौजूदा दिशानिर्देश:

समय-समय पर संशोधित **असम एकीकृत भवन निर्माण (विनियमन) उपनियम, 2022** संरक्षित स्मारक के प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर भूमि उपयोग के संबंध में लागू है। इसे इन विरासत उपनियमों के **अनुलग्नक-III** में संदर्भित किया जा सकता है। इन दिशा-निर्देशों को दो भागों में विभाजित किया गया है।

i. गुवाहाटी महानगर क्षेत्र-2025 के लिए मास्टर प्लान (भाग I: सहायक दस्तावेजों के साथ योजना का विवरण), में कहा गया है कि राज्य सरकार को विरासत भवनों/स्मारकों को सूचीबद्ध करने के लिए एक विरासत संरक्षण समिति की स्थापना करनी चाहिए (भाग 10, धारा 10.1.2)।

ii. गुवाहाटी महानगर क्षेत्र-2025 के लिए मास्टर प्लान (भाग II: भूमि उपयोग ज़ोनिंग और विकास नियंत्रण विनियम), विरासत भवनों और परिसरों के संरक्षण के संबंध में निम्नलिखित प्रावधानों को **अनुलग्नक-III** में संदर्भित किया जा सकता है।

अध्याय V

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अभिलेख (रिकार्ड) में परिभाषित सीमाओं के आधार पर प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों की प्रथम अनुसूची नियम 21 (1)/सर्वेक्षण योजना के अनुसार सूचना

5.1 संस्मारक की सर्वेक्षण योजना:

"उरबासी द्वीप पर नक्काशी, शिलालेख और स्तंभ, स्थान-गुवाहाटी, जिला-कामरूप (अब कामरूप मेट्रो में), असम'' की सर्वेक्षण योजना **अनुलग्नक-I** पर देखी जा सकती है।

5.2 सर्वेक्षित आंकड़ों का विश्लेषण:

5.2.1 प्रतिषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र का विवरण और उनकी मुख्य विशेषताएं:

क) संरक्षित क्षेत्र लगभग 1.316 एकड़ है।

ख) प्रतिषिद्ध क्षेत्र लगभग 15.39 एकड़ है।

ग) विनियमित क्षेत्र लगभग 77.169 एकड़ है।

मुख्य विशेषताएं:

संरक्षित संस्मारक ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है, जिसके उत्तर में उमानंद द्वीप और दक्षिण-पश्चिम में कर्मनाशा द्वीप है। नदी के दोनों किनारों पर शैल-कृत कई मूर्तियां हैं।

5.2.2 निर्मित क्षेत्र का विवरण:

उत्तर: प्रतिषिद्ध क्षेत्र में कोई निर्माण कार्य नहीं है। विनियमित क्षेत्र में उमानंद द्वीप के साथ-साथ कई मंदिर श्री उमानंद मंदिर, शिव मंदिर, श्री हनुमान मंदिर और कुछ दुकानें मौजूद हैं।

पूर्व: प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों में कोई निर्माण कार्य नहीं है।

दक्षिण: प्रतिषिद्ध क्षेत्र में कोई निर्माण कार्य नहीं है। विनियमित क्षेत्र में कर्मनाशा द्वीप मौजूद है।

पश्चिम: प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों में कोई निर्माण कार्य नहीं है।

5.2.3 हरित/खुले स्थानों का विवरण:

उत्तर: ब्रह्मपुत्र नदी प्रतिषिद्ध क्षेत्र में स्थित है, जबकि उमानंद द्वीप और ब्रह्मपुत्र नदी विनियमित क्षेत्र में आती है।

पूर्व: ब्रह्मपुत्र नदी प्रतिषिद्ध और विनियमित दोनों क्षेत्रों में स्थित है।
दक्षिण: ब्रह्मपुत्र नदी प्रतिषिद्ध क्षेत्र में स्थित है, जबकि कर्मनाशा द्वीप और ब्रह्मपुत्र नदी विनियमित क्षेत्र में स्थित हैं।
पश्चिम: ब्रह्मपुत्र नदी प्रतिषिद्ध और विनियमित दोनों क्षेत्रों में स्थित है।

5.2.4 परिसंचरण के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र - सड़कें, फुटपाथ आदि:

वहाँ कोई सड़क या मार्ग नहीं है।

5.2.5 भवनों की मौजूदा ऊँचाई (क्षेत्रवार):

उत्तर: संरचनाओं/इमारतों की ऊंचाई भूतल संरचनाओं के अनुसार है।
दक्षिण: कोई निर्माण मौजूद नहीं है।
पूर्व: कोई निर्माण मौजूद नहीं है।
पश्चिम: कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

5.2.6 प्रतिषिद्ध/विनियमित क्षेत्र के भीतर स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा राज्य संरक्षित संस्मारक और सूचीबद्ध धरोहर भवन, यदि उपलब्ध हों,:

संरक्षित संस्मारक के उत्तर में उमानंद मंदिर स्थित है। यह एक राज्य संरक्षित संस्मारक है।

5.2.7 सार्वजनिक सुविधाएं:

वहाँ कोई सार्वजनिक सुविधाएं नहीं हैं।

5.2.8 संस्मारक तक पहुंच:

ब्रह्मपुत्र के तीन चट्टानी द्वीप - कर्मनाशा, उरबासी और उमानंद, पुराने शहर के केंद्र से सटे हुए हैं। इन द्वीपों तक नाव से पहुंचा जा सकता है। उमानंद घाट से उमानंद द्वीप तक नाव सेवा चलती है।

5.2.9 अवसंरचनात्मक सेवाएँ (जल आपूर्ति, वर्षा जल निकासी, सीवेज, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, पार्किंग आदि):

यहां कोई अवसंरचनात्मक सेवाएं मौजूद नहीं हैं, क्योंकि संरक्षित संस्मारक एक चट्टानी द्वीप है जो वर्ष के अधिकांश समय पानी में डूबा रहता है।

5.2.10 स्थानीय निकायों के दिशा-निर्देशों के अनुसार क्षेत्र की प्रस्तावित ज़ोनिंग:

मौजूदा प्रमुख भूमि उपयोग मानचित्र (गुवाहाटी महानगर क्षेत्र के लिए मास्टर प्लान) में, संरक्षित स्मारक को "खुली जगह/मनोरंजन/खाली भूमि" के रूप में नामित किया गया है, जिसे "खाली भूमि" के रूप में निर्दिष्ट किया गया है। किसी भी मौजूदा स्थानीय प्राधिकरण द्वारा अभी तक जनता के लिए कोई विशिष्ट ज़ोनिंग उपलब्ध नहीं कराई गई है।

अध्याय VI

संस्मारक का वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व

6.1 संस्मारक की वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व:

संरक्षित संस्मारक का महत्वपूर्ण वास्तुशिल्पीय महत्व है, जो इसके अर्द्धवृत्ताकार लेआउट, शैल-कृत सीढ़ी तथा गर्भगृह और मंडप सहित पहले की मंदिर संरचना के निशानों से स्पष्ट है, जो एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का संकेत देता है। इसका **प्रतीकात्मक मूल्य** सूर्य, शिव, विष्णु, गणेश और दशावतार के दृश्यों जैसे देवताओं की जटिल नक्काशी में परिलक्षित होता है, जो धार्मिक महत्व और भारतीय महाकाव्यों से संबंधों को दर्शाता है। **कलात्मक मूल्य** विस्तृत मूर्तिकला कार्य और दिव्य आकृतियों के अभिव्यंजक निरूपण से स्पष्ट है, जो प्राचीन शिल्प कौशल को दर्शाता है। ब्राह्मी और नागरी लिपियों में शिलालेख ऐतिहासिक संदर्भ और धार्मिक प्रथाओं की जानकारी प्रदान करते हुए, **पुरालेखीय मूल्य** को उजागर करते हैं। **ऐतिहासिक मूल्य** 9वीं शताब्दी के कालिकापुराण से जाना जाता है, जिसमें यह दर्ज है कि उमानंद, उरबासी और कर्मनाशा के द्वीप कभी एक ही भूभाग, भस्माचल थे। पाठ में उरबासी कुंड का भी उल्लेख है, जो एक प्राकृतिक आपदा के कारण ब्रह्मपुत्र नदी द्वारा नष्ट कर दिया गया था, जिससे भस्माचल का विखंडन हुआ। 16वीं शताब्दी के योगिनी तंत्र में इस प्राकृतिक आपदा के प्रभाव का वर्णन किया गया है, जो नदी के मार्ग में ऐतिहासिक परिवर्तनों के बारे में जानकारी प्रदान करता है। **पुरातात्विक महत्व** चट्टानों की सतह पर मौजूद कई मूर्तिकला नक्काशी और ब्राह्मी और नागरी लिपि में शिलालेखों से स्पष्ट है, जो उस काल के भाषाई और सांस्कृतिक संदर्भ के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। नक्काशीदार संरेखण,शैल-कृत सोपान और छोटे-छोटे छेद बताते हैं कि इस स्थल पर पहले मंदिर की संरचना थी । कमल की आकृति वाला शिव लिंग गर्भगृह और मंडप के अस्तित्व को दर्शाता है, जो मंदिर के डिजाइन और कार्य के बारे में और सबूत प्रदान करता है।

6.2 संस्मारक की संवेदनशीलता (विकासात्मक दबाव, शहरीकरण, जनसंख्या दबाव आदि):

ब्रह्मपुत्र नदी की मौजूदगी के कारण प्रतिषिद्ध और ज़्यादातर विनियमित क्षेत्र में कोई निर्माण नहीं हुआ है। नदी, संरक्षित संस्मारक के चारों ओर बहती है, जिसके कारण यह साल के लगभग आधे समय पानी में डूबा रहता है। लंबे समय तक डूबे रहने से चट्टान की सतह का क्षरण हो सकता है, जिससे नाजुक शिलालेख और नक्काशी को नुकसान पहुँच सकता है। जबकि उमानंद द्वीप पर कुछ निर्माण कार्य

है, हाल ही में बनाया गया रोपवे उरबासी द्वीप के ऊपर से गुज़रता है, जिससे रोपवे की मोटर से लगातार शोर होता रहता है। इस तरह के विकास कार्य संरक्षित स्मारक और उसके आस-पास के वातावरण पर दबाव बढ़ाते हैं

6.3 संरक्षित संस्मारक या क्षेत्र से दृश्यता और विनियमित क्षेत्र से दृश्यता:

<u>संरक्षित स्मारक से दृश्यता:</u>

संरक्षित संस्मारक ब्रह्मपुत्र नदी में एक नदी द्वीप है, जहाँ से कर्मनाशा और उमानंद द्वीप दिखाई देते हैं।

<u>विनियमित क्षेत्र से दृश्यता:</u>

संरक्षित संस्मारक ब्रह्मपुत्र नदी में एक नदी द्वीप है। उमानंद द्वीप के उत्तर को छोड़कर विनियमित क्षेत्र में कोई निर्माण नहीं है। परिणामस्वरूप, संरक्षित संस्मारक सभी दिशाओं से दिखाई देता है।

6.4 पहचान किया जाने वाला भूमि उपयोग:

संरक्षित संस्मारक ब्रह्मपुत्र नदी से घिरा हुआ है। संरक्षित संस्मारक के उत्तर में विनियमित क्षेत्र में दुकानें और मंदिर हैं।

6.5 संरक्षित संस्मारक के अलावा अन्य पुरातात्विक धरोहर:

संरक्षित संस्मारक के प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों में अभी तक कोई पुरातात्विक विरासत अवशेष नहीं पाए गए हैं।

6.6 सांस्कृतिक परिदृश्य:

संरक्षित संस्मारक के उत्तर में स्थित उमानंद द्वीप, सांस्कृतिक परिदृश्य का एक और उदाहरण है जो कभी उरबासी द्वीप का हिस्सा था। उमानंद द्वीप के अलावा, कर्मनाशा द्वीप उरबासी द्वीप के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है, जो इस क्षेत्र के सांस्कृतिक महत्व को और बढ़ाता है।

6.7 महत्वपूर्ण प्राकृतिक परिदृश्य जो सांस्कृतिक परिदृश्य का हिस्सा बनते हैं और संस्मारक को पर्यावरण प्रदूषण से बचाने में भी मदद करते हैं:

ब्रह्मपुत्र नदी संरक्षित संस्मारक के चारों ओर बहती है, जो एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक परिदृश्य का निर्माण करती है।

6.8 खुली जगह और निर्माण का उपयोग:

संरक्षित संस्मारक का प्रतिषिद्ध क्षेत्र और अधिकांश विनियमित क्षेत्र ब्रह्मपुत्र नदी का हिस्सा है। हालाँकि, उमानंद द्वीप पर, खुली जगहों का उपयोग मुख्य रूप से पार्कों के लिए किया जाता है, जबकि द्वीप पर निर्माण में मंदिर और दुकानें शामिल हैं।

6.9 पारंपरिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ:

उमानंद द्वीप पर स्थित मंदिर संरक्षित संस्मारक के विनियमित क्षेत्र की सीमाओं के भीतर स्थित हैं। परिणामस्वरूप, धार्मिक त्योहारों के दौरान इन मंदिरों में कभी-कभी सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं।

6.10 संस्मारक और विनियमित क्षेत्रों से दिखाई देने वाला क्षितिज:

साफ आसमान, पेड़ और ब्रह्मपुत्र नदी संरक्षित संस्मारक को घेरे हुए हैं। परिणामस्वरूप, संरक्षित संस्मारक विनियमित क्षेत्र के भीतर सभी दिशाओं से दिखाई देता है।

6.11 पारंपरिक वास्तुकला:

संरक्षित संस्मारक के आसपास कोई पारंपरिक वास्तुकला मौजूद नहीं है।

6.12 स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा उपलब्ध विकास योजना:

मौजूदा प्रमुख भूमि उपयोग मानचित्र और प्रस्तावित भूमि उपयोग योजना **अनुलग्नक-IV** पर देखी जा सकती है।

6.13 अनुमेय भवन संबंधी मापदंड:

6.13.1 <u>मरम्मत और नवीनीकरण (प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र में):</u>

आंतरिक परिवर्तन और अनुकूली पुनः उपयोग की सामान्य रूप से अनुमति दी जा सकती है। हालाँकि, बाहरी परिवर्तन सक्षम प्राधिकारी द्वारा विस्तृत जाँच के अधीन होंगे। ऐसे परिवर्तन जिनमें रेट्रोफिटिंग/नवीनीकरण शामिल है, की अनुमति तब दी जा सकती है जब इमारत संरचनात्मक रूप से कमज़ोर या असुरक्षित हो या जब उस पर किसी प्राकृतिक आपदा का प्रतिकूल प्रभाव पड़ा हो और नवीनीकरण अत्यंत आवश्यक हो। मूल इमारत शब्दावली और लेआउट के साथ-साथ निर्मित-खुले संबंधों का पालन किया जाना चाहिए। सक्षम प्राधिकारी से पूर्व अनुमति के अधीन इमारतों की सामान्य मरम्मत और रखरखाव की अनुमति होगी।

भवन/संरचनाओं में मरम्मत और नवीनीकरण संरक्षित संस्मारक और उसके आस-पास के क्षेत्रों की धरोहर विशेषताओं के अनुरूप और उससे मेल खाता होना चाहिए। एल्युमिनियम कम्पोजिट पैनल (एसीपी), हाई प्रेशर लैमिनेट्स (एचपीएल), लैमिनेट्स, टाइलिंग या ग्लेज़िंग जैसी नई क्लैडिंग सामग्री की अनुमति नहीं दी जाएगी। मरम्मत और नवीनीकरण कार्यों को करने में स्थानीय रूप से उपलब्ध निर्माण सामग्री के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

6.13.2 <u>पुनर्निर्माण:</u>

पुनर्निर्माण को एएमएएसआर अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 2(त) में परिभाषित किया गया है तथा विनियमित क्षेत्र में पुनर्निर्माण की अनुमति एएमएएसआर अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ग(2) और एएमएएसआर (विरासत उपनियमों का निर्धारण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम, 2011 के नियम 6(IV) और नियम 7 के अनुसार दी जाती है। किसी संरक्षित संस्मारक या संरक्षित स्थल के प्रतिषिद्ध या विनियमित क्षेत्र में स्थित किसी भी प्रकार के भवन या सरंचना, जो प्राकृतिक आपदाओं से ध्वस्त या क्षतिग्रस्त हो गयी है, और जिसकी मरम्मत नहीं की जा सकती है, के मामले में पुनर्निर्माण की एएमएएसआर (विरासत उपनियमों का निर्धारण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम, 2011 के नियम 16 के अनुसार दी जाती है। प्राकृतिक आपदा के कारण क्षतिग्रस्त भवन अथवा संरचना के पुनर्निर्माण की अनुमति उसी सीमा तक दी जाएगी जितनी कि क्षति हुई है। पुनर्निर्माण के मामले में पुरानी इमारत के प्रतिस्थापन के रूप में नई संरचना या इमारत को पहले से मौजूद संरचना के अनुसार उसी क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर सीमाओं का पालन करना होगा। अग्रभाग में असंगत सामग्री जैसे ग्लेज़िंग, मेटल क्लैडिंग, एल्युमीनियम कम्पोजिट पैनल (एसीपी), हाई प्रेशर लैमिनेट्स (एचपीएल), टाइल्स, लैमिनेट्स के उपयोग की अनुमति नहीं होगी। नई संरचना संरक्षित संस्मारक के धरोहर क्षेत्र और उसके आसपास के क्षेत्र के साथ मेल खाती और उसके अनुरूप होनी चाहिए।

6.13.3 <u>नया निर्माण:</u>

6.13.3 क प्रतिषिद्ध क्षेत्र:

एएमएएसआर अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20क(4) के अनुसार, संरक्षित संस्मारक के प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर किसी भी सार्वजनिक कार्य या जनता के लिए आवश्यक परियोजना या अन्य निर्माण सहित किसी भी नए निर्माण की अनुमति नहीं दी जाएगी।

6.13.3 ख विनियमित क्षेत्र:

संशोधित रूप में गुवाहाटी महानगर क्षेत्र, 2025 के लिए मास्टर प्लान में विनिर्दिष्ट सभी विकास नियंत्रण मानदंड और भवन विनियम लागू होंगे। हालाँकि, इस दस्तावेज़ में विनिर्दिष्ट ऊँचाई और अन्य पैरामीटर संरक्षित संस्मारक के विनियमित क्षेत्र में लागू होंगे।

1. **स्थल पर नए निर्माण की ऊंचाई (ममटी, पैरापेट, जल भंडारण टैंक, मशीन कक्ष, एचवीएसी इकाई, सौर पैनल, वर्षा जल संचयन प्रणाली, टैरेस गार्डन की पेंटहाउस संरचना आदि सहित) या छत पर कोई अन्य सेवाएं:**

   यह क्षेत्र बाढ़ प्रवण क्षेत्र है और इसलिए विनियमित क्षेत्र में नए निर्माण की संभावना कम है। नए निर्माण या मौजूदा इमारतों में परिवर्धन/परिवर्तन के लिए अधिकतम ऊंचाई सीमा **4.50 मीटर** से अधिक नहीं होनी चाहिए (ममटी, पैरापेट, जल भंडारण टैंक, मशीन कक्ष, जनरेटर कक्ष, एचवीएसी यूनिट, सोलर पैनल, वर्षा जल संचयन प्रणाली, टैरेस गार्डन की पेंटहाउस संरचना और इसी तरह की अन्य संरचनाओं सहित) या छत पर कोई भी अन्य से सेवाएं।

   जहां तक संभव हो बेसमेंट के निर्माण को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

2. **उपयोग:**

   (i) वर्तमान भूमि उपयोग को बरकरार रखा जा सकता है।

   (ii) संस्मारक के विनियमित और प्रतिषिद्ध क्षेत्र में जल निकायों द्वारा कवर किए गए क्षेत्र को मौजूदा रूप में बनाए रखा जाएगा और इसमें किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया जाना चाहिए।

3. **अग्रभाग डिजाइन:**

   (i) नए निर्माण का अग्रभाग डिजाइन न्यूनतम प्रकृति का होना चाहिए ताकि यह संस्मारक और आस-पास के क्षेत्र के समग्र धरोहर स्वरूप पर हावी न हो। अग्रभाग का डिजाइन सूक्ष्म, प्लास्टर किया हुआ और मिट्टी के रंगों (सफेद, ग्रे, बेज, भूरा आदि) में रंगा हुआ होना चाहिए।

   (ii) विनियमित क्षेत्र के भीतर स्थित सभी भवनों के लिए दुकानों और आवासों के अनौपचारिक विस्तार को प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।

   (iii) सभी ऐतिहासिक इमारतों, दुकानों के अग्रभागों को मूल डिजाइन (ब्रैकेट, छज्जा, मेहराबदार दरवाजे, खिड़कियां आदि की श्रृंखला) के अनुसार बनाए रखा जाना चाहिए।

   (iv) प्लंबिंग और बिजली की सेवाएं व्यवस्थित होनी चाहिए और इमारत के बाहरी हिस्से में नहीं होनी चाहिए।

4. छत का डिज़ाइन:

(i) छत का डिज़ाइन स्थानीय वास्तुकला के अनुरूप होना चाहिए।

(ii) एल्युमिनियम, फाइबर ग्लास, पॉलीकार्बोनेट या इसी तरह की सामग्री का उपयोग करके अस्थायी प्रकृति की संरचनाओं का निर्माण भवन की छत पर नहीं किया जाना चाहिए।

(iii) सभी सेवाएँ जैसे कि बड़ी एयर कंडीशनिंग इकाइयाँ, छत पर पानी के भंडारण टैंक या छत पर रखे गए बड़े जनरेटर सेट को स्क्रीन दीवारों (ईंट/सीमेंट शीट, लौवर, जालियाँ या ऐसे अन्य डिज़ाइन तत्व) का उपयोग करके बंद किया जाना चाहिए। इन सभी सेवाओं को अधिकतम स्वीकार्य ऊँचाई में शामिल किया जाना चाहिए।

5. निर्माण सामग्री:

संस्मारक के सभी सड़क के अग्रभागों पर निर्माण सामग्री और रंग में एकरूपता बनाए रखी जा सकती है। आधुनिक निर्माण सामग्री जैसे कि एल्युमीनियम क्लैडिंग, कांच की ईंटें और किसी भी अन्य सिंथेटिक टाइल या सामग्री को बाहरी फिनिश के लिए अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। ईंट और पत्थर जैसी पारंपरिक निर्माण सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिए।

6. रंग:

बाहरी रंग संरक्षित संस्मारक के साथ सामंजस्य रखते हुए तटस्थ स्वर का होना चाहिए जैसे कि बफ बलुआ पत्थर का रंग, सफेद, बेज और अन्य मिट्टी के रंग, जो संरक्षित संस्मारक और उसके आसपास के वातावरण के साथ तीव्र विरोधाभास पैदा न करें।

7. अन्य विनियम:

मेट्रो (भूमिगत या ओवरहेड), फुट-ओवर ब्रिज, फ्लाईओवर, बहु-स्तरीय पार्किंग, जेट्टी या ऐसी किसी भी परियोजना जैसे किसी भी बड़े पैमाने पर सार्वजनिक अवसंरचना परियोजना के निर्माण का प्रस्ताव विस्तृत विरासत प्रभाव आकलन रिपोर्ट के अधीन होगा।

6.14 आगंतुक सुविधाएं और साधन:

संरक्षित संस्मारक के आसपास आगंतुक सुविधाओं पर व्यवहार्यता के अनुसार विचार किया जा सकता है।

अध्याय VII
स्थल विशिष्ट सिफारिशें

7.1 स्थल विशिष्ट सिफारिशें:

i. संरक्षित संस्मारक या उसके आसपास के क्षेत्रों में एलईडी या डिजिटल साइन, प्लास्टिक फाइबर ग्लास या किसी अन्य अत्यधिक परावर्तक सिंथेटिक सामग्री का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

ii. संरक्षित संस्मारक के निकट, विशेषकर संरक्षित संस्मारक की चारदीवारी पर होर्डिंग्स, बिल बोर्ड और पोस्टर के रूप में किसी भी प्रकार के विज्ञापन की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

iii. बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में आम जनता की सुरक्षा के लिए स्थानीय निकायों द्वारा उठाए गए किसी भी कदम की अनुमति दी जा सकती है।

iv. संस्मारक और उसके आस-पास के क्षेत्र पर किसी भी प्रतिकूल प्रभाव को कम करने के लिए संस्मारक के आस-पास पर्यावरण अनुकूल परिवहन और बिजली बैकअप के उपयोग को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

v. सर्वोत्तम प्रथाओं का पालन करते हुए हरित भवनों के निर्माण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

7.2 अन्य सिफारिशें:

i. क्षेत्र को प्लास्टिक एवं पॉलीथीन मुक्त क्षेत्र घोषित किया जाना चाहिए।

ii. सांस्कृतिक धरोहर स्थलों और परिसरों के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन दिशानिर्देश https://nidm.gov.in/PDF/pubs/NDMA/20.pdf पर देखे जा सकते हैं।

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CULTURE
NATIONAL MONUMENTS AUTHORITY

In exercise of the powers conferred by section 20E of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, as amended, read with Rule 22 of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (Framing of Heritage Bye-Laws and Other Functions of the Competent Authority) Rule, 2011, the following Heritage Bye-Laws for the Protected Monument **"The carvings, inscriptions and pillar on the Urbasi Island, Locality- Guwahati, District– Kamrup (now in Kamrup Metro), Assam"** prepared by the Competent Authority, in consultation with INTACH, New Delhi were published on 22.12.2022, as required by sub-rule 2 of Rule 18 of the National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of Authority and Conduct of Business) Rules, 2011, for inviting objections or suggestions from the public;

The objections/suggestions, received before the specified date have duly been considered by the National Monuments Authority in consultation with the Competent Authority.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (5) of the Section 20E of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, as amended, the National Monuments Authority, hereby makes the following bye-laws, namely:

Heritage Bye-Laws for "The carvings, inscriptions and pillar on the Urbasi Island, Locality- Guwahati, District– Kamrup (now in Kamrup Metro), Assam"

CHAPTER I

PRELIMINARY

1.1 Short title, extent and commencements:-

(i) These bye-laws may be called the National Monuments Authority Heritage Bye-laws 2025 of Protected Monument **"The carvings, inscriptions and pillar on the Urbasi Island, Locality- Guwahati, District– Kamrup (now in Kamrup Metro), Assam"**.

(ii) They shall extend to the entire Prohibited and Regulated Area of the Protected Monuments.

(iii) The provisions of these bye-laws shall have effect notwithstanding anything inconsistent therewith contained in any other bye-laws, whether made before or after the commencement of these bye-laws, or in any instrument having effect by virtue of any bye-laws. It shall not be obligatory to carry out amendments in these bye-laws to make them consistent with any other bye-laws.

(iv) They shall come into force with effect from the date of their publication.

1.2 Definitions:

1. In these bye-laws, unless the context otherwise requires, -

(a) "ancient monument" means any structure, erection or monument, or any tumulus or place of interment, or any cave, rock sculpture, inscription or monolith, which is of historical, archaeological or artistic interest and which has been in existence for not less than one hundred years, and includes -

(i) the remains of an ancient monument,

(ii) the site of an ancient monument,

(iii) such portion of land adjoining the site of an ancient monument as may be required for fencing or covering in or otherwise preserving such monument, and

(iv) the means of access to, and convenient inspection of an ancient monument,

(b) "archaeological site and remains" means any area which contains or is reasonably believed to contain ruins or relics of historical or archaeological importance which have been in existence for not less than one hundred years, and includes:

(i) such portion of land adjoining the area as may be required for fencing or covering in or otherwise preserving it, and

(ii) the means of access to, and convenient inspection of the area,

(c) "Act" means the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, as amended,

(d) "Archaeological Officer" means an officer of the Department of Archaeology of the Government of India not lower in rank than Assistant Superintendent of Archaeology,

(e) "Authority" means the National Monuments Authority constituted under Section 20F of the Act,

(f) "Competent Authority" means an officer not below the rank of Director of archaeology or Commissioner of archaeology of the Central or State Government or equivalent rank, specified, by notification in the Official Gazette, as the competent authority by the Central Government to perform functions under this Act:

Provided that the Central Government may, by notification in the Official Gazette, specify different competent authorities for the purpose of section 20C, 20D and 20E,

(g) "construction" means any erection of a structure or a building, including any addition or extension thereto either vertically or horizontally, but does not include any re-construction, repair and renovation of an existing structure or building, or, construction, maintenance and cleansing of drains and drainage works and of public latrines, urinals and similar conveniences, or, the construction and maintenance of works meant for providing supply or water for public, or, the construction or maintenance, extension, management for supply and distribution of electricity to the public or provision for similar facilities for public,

(h) "Government" means The Government of India,

(i) "maintain", with its grammatical variations and cognate expressions, includes the fencing, covering in, repairing, restoring and cleansing of a Protected Monument, and the doing of any act which may be necessary for the purpose of preserving a Protected Monument or of securing convenient access thereto,

(j) "owner" includes:

(i) A joint owner invested with powers of management on behalf of himself and other joint owners and the successor-in-title of any such owner, and

(ii) Any manager or trustee exercising powers of management and the successor-in- office of any such manager or trustee,

(k) "prescribed" means prescribed by rules made under this Act;

(l) "Prohibited Area" means any area specified or declared to be a Prohibited Area under section 20A,

(m) "Protected Area" means any archaeological site and remains which is declared to be of national importance by or under this Act,

(n) "Protected Monument" means any ancient monument which is declared to be of national importance by or under this Act,

(o) "Regulated Area" means any area specified or declared to be a Regulated Area under section 20B,

(p) "re-construction" means any erection of a structure or building to its pre-existing structure, having the same horizontal and vertical limits,

(q) "repair and renovation" means alterations to a pre-existing structure or building, but shall not include construction or re-construction,

2. The words and expressions used herein and not defined shall have the same meaning as assigned in the Act or the rules made there under.

CHAPTER II

Background of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act, 1958, as amended

2.1 Background of the Act:

The Heritage Bye-Laws are intended to guide physical, social and economic interventions within 300 metres in all directions of the Protected Monument. The 300 metres area has been divided into two parts (i) the Prohibited Area, the area beginning at the limit of the Protected Area or the Protected Monument and extending to a distance of 100 metres in all directions and (ii) the Regulated Area, the area beginning at the limit of the Prohibited Area and extending to a distance of 200 metres in all directions.

As per the provisions of the Act, no person shall undertake any construction or mining operation in the Protected Area and Prohibited Area while permission for repair and renovation of any building or structure, which existed in the Prohibited Area before 16th day of June, 1992, or which had been subsequently constructed with the approval of Director General (DG), Archaeological Survey of India (ASI) and; permission for construction, re-construction, repair or renovation of any building or structure in the Regulated Area, must be sought from the Competent Authority.

2.2 Provision of the Act related to Heritage Bye-laws:

Section 20E of the AMASR Act, 1958, as amended and Rule 22 of the Ancient Monument and Archaeological Sites and Remains (Framing of Heritage Bye-Laws and other function of the Competent Authority) Rules 2011, specifies framing of Heritage Bye-Laws for Protected Monuments. Ibid Rule provides parameters for the preparation of Heritage Bye-Laws. Rule 18 of the National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of Authority and Conduct of Business) Rules, 2011, specifies the process of approval of Heritage Bye-laws by the Authority.

2.3 Rights and Responsibilities of Applicant:

Section 20C of the AMASR Act, 1958, as amended, specifies details of application for repair and renovation in the Prohibited Area, or construction or re- construction or repair or renovation in the Regulated Area as described below:

(a) Any person, who owns any building or structure, which existed in a Prohibited Area before 16th day of June, 1992, or, which had been subsequently constructed with the approval of the Director General and desires to carry out any repair or renovation of such building or structure, may make an application to the Competent Authority for carrying out such repair and renovation as the case may be.

(b) Any person, who owns or possesses any building or structure or land in any Regulated Area, and desires to carry out any construction or re-construction or repair or renovation of such building or structure on such land, as the case may be, make an application to the Competent Authority for carrying out construction or re-construction or repair or renovation as the case may be.

(c) It is the responsibility of the applicant to submit all relevant information and abide by the National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of the Authority and Conduct of Business) Rules, 2011**.**

CHAPTER III

Location and Setting of the Protected Monument - The carvings, inscriptions and pillar on the Urbasi Island, Locality- Guwahati, District– Kamrup (now in Kamrup Metro), Assam

3.1 Location and Setting of the Monument:

The Protected Monument - Urbasi Island (presently known as Urvashi Island) is a small river island situated on the Southern bank of the Brahmaputra River in Baruah Souk, North Guwahati.

The geographical coordinates of its location are**: Latitude 26°11'38.2"N and Longitude 91°44'41.8"E**.

The Protected Monument can be reached by boat from the Umananda Ferry Ghat. The Brahmaputra River flows around the Protected Monument, resulting it to be submerged under river water for nearly half of the year.

Guwahati Bus Station is located approximately 11 kilometres from the Protected Monument. The Guwahati Railway Station is situated 3 kilometres South of the Protected Monument, while the Lokpriya Gopinath Bordoloi International Airport, Guwahati, is 27 kilometres to the West.

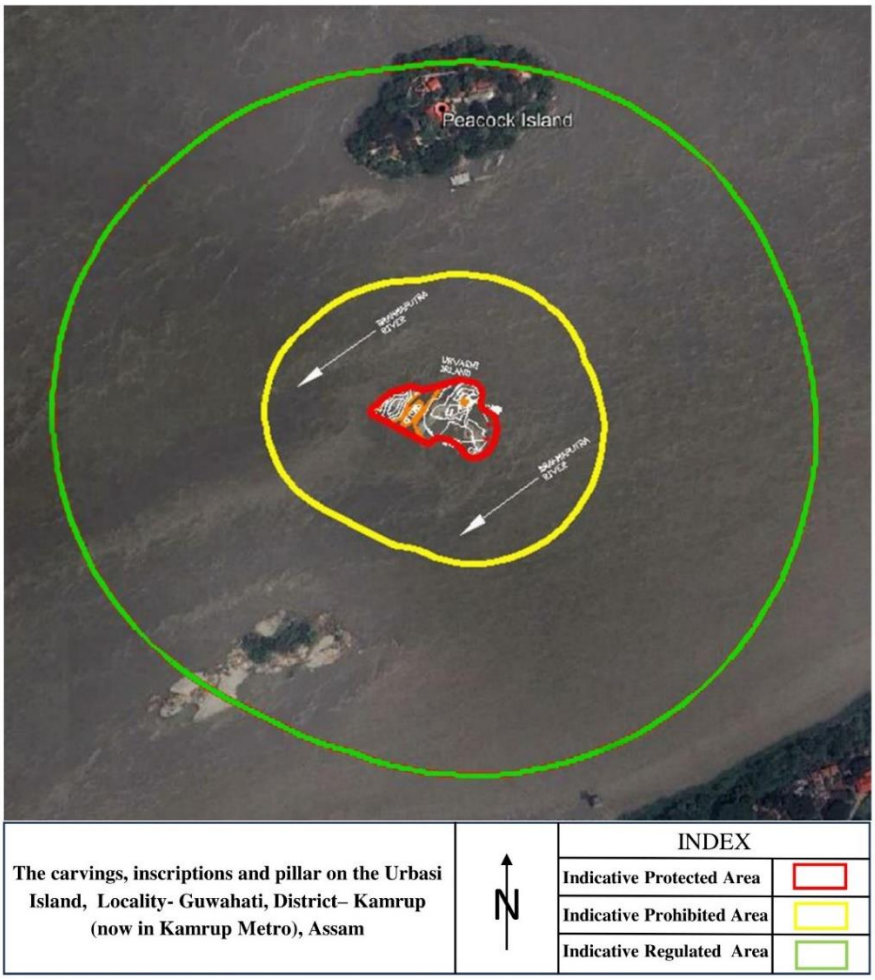

Figure 1: Satellite Imagery showing location of the "Carvings, inscriptions and pillar on the Urbasi Island", Guwahati, District– Kamrup (now in Kamrup Metro), Assam

3.2 Protected boundary of the Monument:

The Protected Boundary of the Protected Monument- "The carvings, inscriptions and pillar on the Urbasi Island, Locality- Guwahati, District– Kamrup (now in Kamrup Metro), Assam" may be seen at **Annexure-I**.

3.2.1 Notification Map/ Plan as per ASI records:

Notification of "The carvings, inscriptions and pillar on the Urbasi Island, Locality- Guwahati, District– Kamrup (now in Kamrup Metro), Assam" may be seen at **Annexure-II**.

3.3 History of the Monument:

The Kalikapurana of the 9th century C.E. states that the three islands of Umananda, Urbasi and Karmanasha formed one landmass known as Bhasmachala, within which the Urbasi Kunda existed. The 16th century C.E. Yogini Tantra mentions that a natural calamity caused the destruction of the Urbasi Kunda by the Brahmaputra, resulting in the river's current slowing down and indicating a widening of its course due to the dismemberment of Bhasmachala into three islands. The names of these three islands hold immense historic importance, with a deep religious and cultural impact on the people. They are associated with popular mythical episodes linking Assam with the Indian epics and serve as inspiring sources of national integration.[1]

3.4 Description of Monument (architectural features, elements, materials, etc.):

The rocks of the Protected Monument feature a significant number of sculptural carvings, inscriptions and figures. Images of Surya, Devi with folded hands, Siva Linga with a lotus, Siva with Nandi and a devotee, a seated image of Ganesa, Vishnu with two devotees and a panel of Dasavatara (the ten incarnations of Vishnu) are beautifully carved on the rocks. There are two other rock inscriptions engraved in late Brahmi and Nagari characters. There are also traces of some carved alignments, rock-cut sopānas and small holes, likely meant for iron clamps and wooden posts or nails. The alignments, sopānas and holes indicate the existence of an earlier temple at this site. The Siva Linga with a lotus suggests that the temple had its garbhagriha and mandapa. The apsidal layout of this temple remains prominent and the Northern rock-cut stairway is still clearly visible.[2]

3.5 Current Status:

3.5.1 Condition of the Monument- condition assessment:

The maintenance and preservation of the Protected is the exclusive domain of Archaeological Survey of India. The photographs depicting the present condition of the Protected Monument is appended at **Annexure-V**.

[1] Archaelogical Survey of India (Guwahati Circle)
[2] Archaelogical Survey of India (Guwahati Circle)

3.5.2 Daily footfalls and occasional gathering numbers:

The Protected Monument is an island in the middle of Brahmaputra River. Apropos, the access to the island is limited, especially during the rainy season. It is pertinent to mention that there is a ferry service from Umananda ferry ghat to Umananda Island and the visitors visit to this site using this ferry services in other season.[3]

[3] Archaeological Survey of India (Guwahati Circle)

CHAPTER IV

Existing zoning, if any, in the local area development plans

4.1 Existing zoning:

In the Comprehensive Master Plan for Guwahati Metropolitan Area, 2025, the Protected Monument is designated as:

i. In the Existing Predominant Land Use Map – the monument is placed under "Open space/recreation/vacant land", specified as – "Vacant land" **[Annexure-IV (a)]**.

ii. In the Proposed Land use zoning plan-2025 – an aerial ropeway is proposed connecting Guwahati city and North Guwahati, in the Regulated Area of the Urbasi island **[Annexure-IV (b)]**.

4.2 Existing Guidelines of the local bodies:

Assam Unified Building Construction (Regulation) Byelaws, 2022, as amended from time to time is applicable with respect to land use within the Prohibited and Regulated Areas of the Protected Monument. It can be referred to in **Annexure-III** of these Heritage Bye-Laws. These guidelines are divided into two parts.

i. The Master Plan for Guwahati Metropolitan Area-2025 (Part I: Plan details with supporting documents), states that the State Government must establish a Heritage Conservation Committee for listing heritage buildings/monuments (Part 10, Section 10.1.2).

ii. In the Master Plan for Guwahati Metropolitan Area-2025 (Part II: Land Use Zoning and Development Control Regulations), the following provisions regarding the conservation of heritage buildings and precincts can be referred to in **Annexure-III**.

CHAPTER V

Information as per First Schedule, Rule 21(1)/ Survey Plan of the Prohibited and the Regulated Areas on the basis of boundaries defined in Archaeological Survey of India records

5.1 Survey Plan of Monument:

Survey plan of "The carvings, inscriptions and pillar on the Urbasi Island, Locality-Guwahati, District– Kamrup (now in Kamrup Metro), Assam" may be seen at **Annexure-I**.

5.2 Analysis of surveyed data:

5.2.1 Prohibited Area and Regulated Area details and their salient features:

I. Protected Area is 1.316 Acres, approximately.

II. Prohibited Area is 15.39 Acres, approximately.

III. Regulated Area is 77.169 Acres, approximately.

Salient features:

The Protected Monument is situated on the Southern bank of the Brahmaputra River, with Umananda Island to the North and Karmanasha Island to the South-West. Both banks of the river feature a significant number of rock-cut sculptures.

5.2.2 Description of built up area:

North: No construction is present in the Prohibited Area. In the Regulated Area, Umananda Island along with several temples Sri Umananda Temple, Shiv Temple, Shree Hanuman Temple and a few shops are present.

East: No construction is present in the Prohibited and Regulated Areas.

South: No construction is present in the Prohibited Area. In the Regulated Area, Karmanasha Island is present.

West: No construction is present in the Prohibited and Regulated Areas.

5.2.3 Description of green/open spaces:

North: The Brahmaputra River is located within the Prohibited Area, while Umananda Island and the Brahmaputra River fall within the Regulated Area.

East: The Brahmaputra River is located within both the Prohibited and Regulated Areas.

South: The Brahmaputra River is located in the Prohibited Area, while Karmanasha Island and the Brahmaputra River are located in the Regulated Area.

West: The Brahmaputra River is located within both the Prohibited and Regulated Areas.

5.2.4 Area covered under circulation- roads, footpaths etc.:

There are no roads or pathways.

5.2.5 Heights of buildings (Zone wise):

North: The height of the structures/buildings ranges ground floor structures.

South: No construction is present.

East: No construction is present.

West: No construction is present.

5.2.6 State protected monuments and listed Heritage Buildings by local Authorities, if available, within the Prohibited/Regulated Area:

The Umananda Temple is located to the North of the Protected Monument. It is a State Protected Monument.

5.2.7 Public amenities:

There are no public amenities.

5.2.8 Access to monument:

The three rocky islands of the Brahmaputra — Karmanasha, Urbasi and Umananda, are adjacent to the old city centre. These islands can be reached by boat. A boat service operates from Umananda Ghat to the Umananda Island.

5.2.9 Infrastructure services (water supply, storm water drainage, sewage, solid waste management, parking etc.):

No infrastructure services are present, as the Protected Monument is a rocky island that remains submerged underwater for most past of the year.

5.2.10 Proposed zoning of the area as per guidelines of the Local Bodies:

In the **Existing Predominant Land Use Map** (Master Plan for Guwahati Metropolitan Area), the Protected Monument is designated as "Open space/recreation/vacant land", specified as – "Vacant land". No specific zoning has yet been made available to the public by any of the current local authorities.

CHAPTER VI

Architectural, historical and archaeological value of the monument

6.1 Architectural, historical and archaeological value:

The Protected Monument holds significant **architectural value**, evident in its apsidal layout, rock-cut stairway and traces of an earlier temple structure, including a garbhagriha and mandapa, indicating a rich cultural heritage. The **iconographic value** is reflected in intricate carvings of deities like Surya, Siva, Vishnu, Ganesa and scenes from the Dasavatara, showcasing religious significance and connections to Indian epics. The **artistic value** is evident in detailed sculptural work and expressive representations of divine figures, reflecting ancient craftsmanship. Inscriptions in late Brahmi and Nagari scripts highlight **epigraphical value**, offering insights into the historical context and religious practices. The **historical value** is known from the 9th century Kalikapurana which records that the islands of Umananda, Urbasi, and Karmanasha once formed the single landmass Bhasmachala. The text also mentions Urbasi Kunda, a feature destroyed by the Brahmaputra River due to a natural calamity, leading to Bhasmachala's fragmentation. The 16th century Yogini Tantra describes this natural disaster's impact, providing insights into historical changes in the river's course. **Archaeological value** is evident in the rock surfaces adorned with numerous sculptural carvings and inscriptions in late Brahmi and Nagari scripts, offering significant information about the period's linguistic and cultural context. Carved alignments, rock-cut sopānas and small holes suggest an earlier temple structure at the site. The Siva Linga with a lotus motif indicates the existence of a garbhagriha and mandapa, providing further evidence of the temple's design and function.

6.2 Sensitivity of the monument (e.g. developmental pressure, urbanization, population pressure etc.):

There is no construction in the Prohibited and most of the Regulated Area due to the presence of the Brahmaputra River. The river flows around the Protected Monument, causing it to be submerged underwater for nearly half of the year. Prolonged submersion can lead to the erosion of the rock surface, which may damage the delicate inscriptions and carvings. While Umananda Island has some construction, the recently constructed ropeway passes over Urbasi Island, contributing to constant noise from the ropeway's motor. These developments add pressure to the Protected Monument and its surrounding environment.

6.3 Visibility from the Protected Monument or Area and visibility from Regulated Area:

Visibility from the Protected Monument:

The Protected Monument is a river island in the Brahmaputra River, from which the Karmanasha and Umananda islands are visible.

Visibility from Regulated Area:

The Protected Monument is a river island in the Brahmaputra River. There are no constructions in the Regulated Area, except to the North on Umananda Island. As a result, the Protected Monument is visible from all directions.

6.4 Land-use to be identified:

The Protected Monument is surrounded by the Brahmaputra River. To the North of the Protected Monument , the Regulated Area has shops and temples.

6.5 Archaeological heritage remains other than Protected Monument:

No archaeological heritage remains are found as yet within the Prohibited and the Regulated Areas of the Protected Monument.

6.6 Cultural landscapes:

Umananda Island, located to the North of the Protected Monument, is another example of a cultural landscape that was once part of Urbasi Island. In addition to Umananda Island, Karmanasha Island lies to the South-West of Urbasi Island, further contributing to the area's cultural significance.

6.7 Significant natural landscapes that form part of cultural landscape and also help in protecting monuments from environmental pollution:

The Brahmaputra River flows around the Protected Monument, forming an important natural landscape.

6.8 Usage of open space and constructions:

The Prohibited Area and most of the Regulated Area of the Protected Monument are part of the Brahmaputra River. However, on Umananda Island, open spaces are primarily used for parks, while constructions on the island include temples and shops.

6.9 Traditional, historical and cultural activities:

The temples situated on Umananda Island are located within the boundaries of the Regulated Area of the Protected Monument. Consequently, occasional cultural events take place in these temples during religious festivals.

6.10 Skyline as visible from the monument and from Regulated Areas:

Clear skies, trees and the Brahmaputra River envelop the Protected Monument. Consequently, the Protected Monument is visible from all directions within the Regulated Area.

6.11 Traditional Architecture:

No traditional architecture exists around the Protected Monument.

6.12 Developmental plan, as available, by the local authorities:

The Existing Predominant Land Use Map and Proposed Landuse plan may be seen at **Annexure-IV**.

6.13 Permissible Building related parameters:

6.13.1 Repair and Renovation (in Prohibited and Regulated area):

Internal changes and adaptive reuse may be generally permitted. However, external changes shall be subject to detailed scrutiny by the Competent Authority. Such changes which include retrofitting/renovation may be permitted when the building is structurally weak or unsafe or when it has been adversely impacted by any natural calamity and renovation is absolutely necessary. Original building vocabulary and layout along with built-open relationships are to be adhered to. General repair and upkeep of buildings will be permissible, subject to prior permission from the Competent Authority.

The repair and renovation in building/structures should be sympathetic and congruous with the heritage character of the Protected Monument and its surrounding areas. New cladding materials like Aluminum Composite Panels (ACP), High Pressure Laminates (HPL), laminates, tiling or glazing will not be permitted. Use of locally available building material should be encouraged in carrying out repair and renovation works.

6.13.2 Reconstruction:

Reconstruction is defined in Section 2(k) of Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act, 1958, as amended. Permission for reconstruction in Regulated Area is accorded as per Section 20C(2) of the AMASR Act, 1958, as amended, and Rule 6 (IV) and Rule 7 AMASR (Framing of heritage Bye-laws and other functions of the Competent Authority) Rules, 2011. In case of any type of building or structure located in the Prohibited or Regulated Area of the Protected Monument or Protected Site, collapsed or damaged and found beyond repair due to natural calamities, the permission for reconstruction is accorded as per Rule 16 of AMASR (Framing of heritage Bye-laws and other functions of the Competent Authority) Rules, 2011. Reconstruction of building or structure damaged due to natural calamity shall be permissible only to the extent it is damaged. The new structure or building as a replacement to the older building in case of reconstruction shall follow the same horizontal and vertical limits as per the pre-existing structure. The use of incongruous materials in the façade such as glazing, metal cladding, Aluminium Composite Panels (ACP), High Pressure Laminates (HPL), tiles, laminates will not be permissible. The new structure should be sympathetic and congruous with the heritage character of the Protected Monuments and its surrounding area.

6.13.3 <u>New Construction</u>:

6.13.3.A Prohibited Area:

As per Section 20A(4) of AMASR Act, 1958 as amended, no new construction including carrying out any public work or project essential to the public or other construction, shall be permitted within the Prohibited Area of the Protected Monument.

6.13.3.B Regulated Area:

All the development control norms and building regulations specified in the Master Plan for Guwahati Metropolitan Area, 2025 as amended shall be applicable. However, the height and other parameters specified in this document shall be applicable in the Regulated Area of the Protected Monument.

1. **Height of the new construction on the site (including mumty, parapet, water storage tank, machine room, HVAC unit, solar panel, rain water harvesting system, penthouse structures of terrace garden etc.) or any other services on the roof:**

   The area is flood prone zone and hence there is less likelihood of carrying out new construction in the Regulated Area. The maximum height limit for new construction or additions/alteration to existing buildings shall not exceed **4.50 metres** (including mumty, parapet, water storage tank, machine room, generator room, HVAC unit, solar panel, rainwater harvesting system, penthouse structures of terrace garden and other similar structures) or any other services on the roof.

Construction of basement should be discouraged as far as feasible.

2. **Usage:**

   i. Present land use may be retained.
   ii. The area covered by water bodies in the Regulated and Prohibited Area of the monument shall be maintained as existing and should not be changed in any manner.

3. **Façade design:**

   i. The façade design of new construction must be minimalistic in nature, so that it does not overpower the monument and the overall heritage character of the surrounding area. The façade design should be subtle, plastered and painted in earthy colours (white, grey, beige, brown etc.)

   ii. Informal extensions of shops and residences are to be restricted for all the buildings located within Regulated Area.

iii. Façades of all historic buildings, shop houses need to be maintained as per original design (series of brackets, chajjas, arched doors, windows etc.).

iv. Plumbing and electrical services shall be organized and not on the exterior of the building.

4. Roof design:

i. The roof design should be in harmony with the local architecture.

ii. Erection of Structures, even of temporary nature, using materials such as Aluminium, fiber glass, polycarbonate or similar materials should be discouraged on the roof of the building.

iii. All services such as large air conditioning units, rooftop water storage tanks or large generator sets placed on the roof to be screened off using screen walls (brick/cements sheets, louvers, jaalis or other such design elements). All of these services should be included in the maximum permissible height.

5. Building material:

Consistency in building materials and colour along all street façades of the monument may be maintained. Modern building materials such as Aluminium cladding, glass bricks and any other synthetic tiles or materials should not be permitted for exterior finishes. Traditional building materials such as brick and stone should be used.

6. Colour:

The exterior colour should be of a neutral tone in harmony with the Protected Monument such as buff sandstone colour, white, beige and other earthy colours which do not create a harsh contrast with the protected monument and its immediate surroundings.

7. Other Regulations:

Proposal for construction of any large-scale public infrastructure project like Metro (underground or overhead), foot-over bridges, flyover, multi-level parking, jetty or any such project shall be subject to a detailed Heritage Impact Assessment report.

6.14 Visitors facilities and amenities:

Visitor facilities may be considered in the vicinity of the Protected Monument as per feasibility.

CHAPTER VII

Site Specific Recommendations

7.1 Site Specific Recommendations:

i. LED or digital signs, plastic fiber glass or any other highly reflective synthetic material should not be used for signages in the vicinity of the Protected Monument or its immediate surrounding areas.

ii. No advertisements in the form of hoardings, bill-boards and posters will be permitted near the Protected Monument, especially on the boundaries of the Protected Monument.

iii. Any measures taken by the Local bodies for safety and security of the general public at large in the flood prone zone may be permitted.

iv. Use of eco-friendly transportation and power backup in the vicnity of the monument may be encouraged to mitigate any adverse impact on monument and its surroundings.

v. Construction of green buildings following the best practices to be encouraged.

7.2 Other recommendations:

i. The area should be declared as Plastic and Polythene free zone.

ii. National Disaster Management Guidelines for Cultural Heritage Sites and Precincts may be referred at https://nidm.gov.in/PDF/pubs/NDMA/20.pdf

अनुलग्नक
ANNEXURES

अनुलग्नक–I
ANNEXURE–I

संस्मारक - उरबासी द्वीप पर नक्काशी, शिलालेख और स्तंभ, स्थान - गुवाहाटी, जिला - कामरूप (अब कामरूप मेट्रो में), असम की सर्वेक्षण योजना

Survey Plan of the Monument - The carvings, inscriptions and pillar on the Urbasi Island, Locality - Guwahati, District– Kamrup (now in Kamrup Metro), Assam

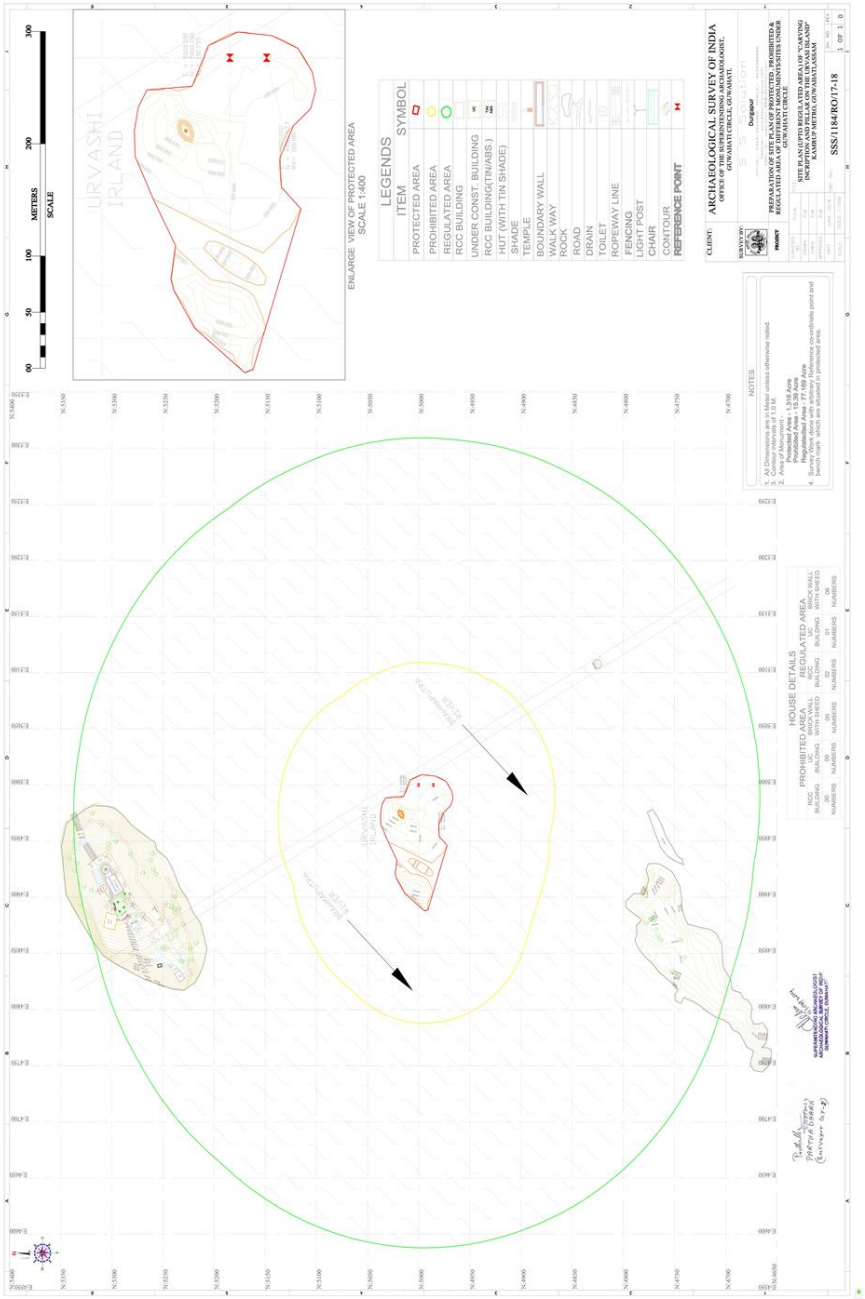

अनुलग्नक-II
ANNEXURE-II

एएसआई रिकॉर्ड के अनुसार अधिसूचना मानचित्र - संरक्षण सीमाओं की परिभाषा
Notification map as per ASI records - definition of Protection Boundaries

मूल अधिसूचना
Original Notification

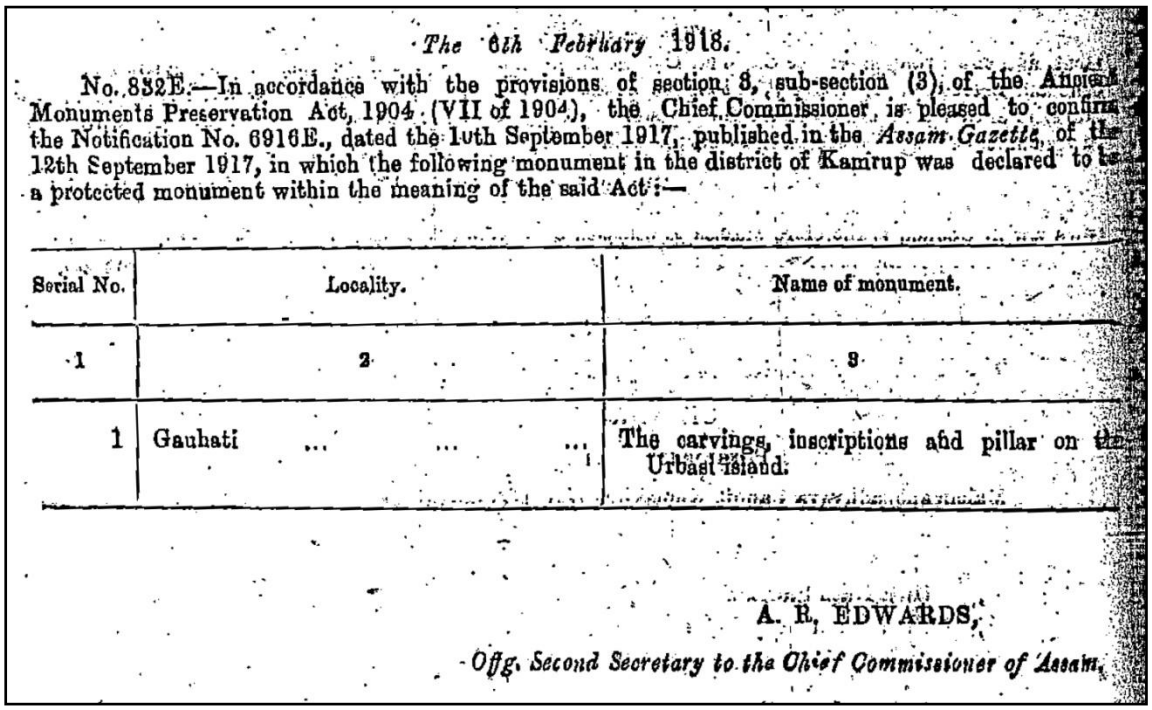

The 6th February 1918.

No. 832E.—In accordance with the provisions of section 3, sub-section (3), of the Ancient Monuments Preservation Act, 1904 (VII of 1904), the Chief Commissioner is pleased to confirm the Notification No. 6916E., dated the 10th September 1917, published in the *Assam Gazette*, of the 12th September 1917, in which the following monument in the district of Kamrup was declared to be a protected monument within the meaning of the said Act:—

Serial No.	Locality.	Name of monument.
1	2	3
1	Gauhati	The carvings, inscriptions and pillar on the Urbasi island.

A. R. EDWARDS,
Offg. Second Secretary to the Chief Commissioner of Assam.

मूलरूप की टंकित अधिसूचना
Typed copy of Original Notification

The 6th February 1918.

No. 832E.- In accordance with the provisions of section 3, sub-section (3), of the Ancient Monuments Preservation Act, 1904 (VII of 1904), the Chief Commissioner is pleased to confirm the Notification No. 6916E., dated the 10th September 1917, published in the *Assam Gazette* of the 12th September 1917, in which the following monument in the district of Kamrup was declared to be a protected monument within the meaning of the said Act:-

Serial No.	Locality	Name of monument
1	2	3
1	Gauhati	The carvings, inscriptions and pillar on the Urbasi island.

A.R. EDWARDS,
Offg. Second Secretary to the Chief Commissioner of Assam

अनुलग्नक-III
ANNEXURE-III

स्थानीय निकायों के मौजूदा दिशानिर्देश
Existing Guidelines of the local bodies

A. As per the Assam Unified Building Construction (Regulation) Byelaws, 2022.

(i) Chapter IV (Miscellaneous), Section 117:

The following areas to be earmarked by the Authority by notification from time to time if not already notified in the Master Plan should be excluded for permission of multi-storeyed building.

Sub-section (i) - National Heritage zones consisting of places of pilgrimage and worship (like Satra, Namghar, Devalaya, Mandir, Math, Masjid, Dargah, Gurudwara, Church) and sites of historical and cultural importance;

Sub-section (x) - Regulations for controlling buildings in the vicinity of archaeological sites as notified under The Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (Amendment and Validation) Act, 2010, shall be as per provision of the said Act.

(ii) Chapter VII (Conservation of heritage sites including heritage buildings, heritage precincts and natural feature areas), Section 123:

Sub-section (d) – The provisions of Ancient Monument and Archeological Site and Remains (Amendment and Validation) Act, 2010 of Government of India shall be strictly followed for any development activity with the prohibited zone within 100 Mts (Section 20A) from the periphery of the notified Monument and heritage sites under the provisions of the act and from 100 Mts to 200 Mts (Section 20B) from the periphery as the restricted zones of these Heritage sites. Before allowing any development activity within these restricted zones, NOC from the competent authority shall be mandatorily obtained as per laid down procedure under the provision of the Act.

(ix) The minimum distance of any building from the edge of natural drainage channels shall be as given below:

Distance from Water bodies	
River (as marked in the plan)	15 m
Bharalu, Mora Bharalu & Bondajan	10 m
Other channels	06 m
Minor Drains (not marked in the plan)	In accordance with setback requirements for buildings provided in the byelaws
Notified water bodies (Deepar Beel, Silsako Waterbody)	15 m
Other notified water bodies (Sarusola, Barsola etc.)	06 m
Other Large Ponds/water bodies (as marked in the plan)	10 m
Small Ponds (Not marked in the plan)	In accordance with setback requirements for buildings provided in the byelaws

(i) In the Master Plan for Guwahati Metropolitan Area- 2025 (Detail of Plan with supporting documents) — Part I: It is clearly mentioned to establish a Heritage Conservation Committee by the state government for listing of the heritage building/monument (Part 10, section 10.1.2.).

(ii) In the Master Plan for Guwahati Metropolitan Area- 2025 (Land use zoning and Development control Regulation)- Part II, the following provisions arelaid regarding-

- **Regulations for Conservation of Heritage Buildings and Heritage Precincts.**

a. As per the Section 13.5 (1) - This regulation would apply to those buildings, artefacts, structures, areas and precincts of historic and/ or aesthetic and/or architectural and/or cultural significance (herein after referred as listed buildings/ heritage buildings and listed precincts/ Heritage precincts) which are listed in a notification issued by state Govt. This list shall be supplemented from time to time by Govt. and the Competent Authority, provided that before the list is supplemented, objections and suggestions from the public shall be invited and duly considered by the Govt., and/or the Competent Authority respectively. The listed Buildings /Precincts could be graded.

b. As per the Section 13.5 (2)- **Restriction on Development / Redevelopment / Repairs etc. -** No development/redevelopment or of additions, alteration, repairs, renovation including the painting of buildings, replacement of special features or plastering or demolition of any part there of the said listed buildings or listed precincts shall be further

allowed except with prior written permission of the Competent Authority. Before granting any such permission the competentAuthority shall consult the Heritage Conservation Committee. Provided that before granting any permission for demolition or major alteration/ addition to listed buildings (or buildings within listed precincts) objection and suggestion from the public shall be invitedand duly considered by the Competent Authority.

c. As per the Section 13.5 (4)- Building included in Heritage Precincts shall maintain the skyline in the precincts (without any-high rise development) as may be existing in the surrounding area, so as not to diminish or destroy the value and beauty of the said Heritage building/Heritage precincts. The development within the precincts shall be in accordance with the guidelines framed by the Competent Authority on the advice of the Heritage Conservation Committee. As per the Section 13.5 (5)- **Signs and Out Door Display Structures-** No advertising sign or outdoor display structures shall be permitted on buildings of architectural, aesthetic, historical or heritage importance as may be decided by the Competent Authority, on the advice of the Heritage Conservation Committee or on Government buildings, such that in the case of Government buildings only advertising signs of outdoor display structures may be permitted if they relate to the activities for the said buildings, own purposes of related programmes. Provided that if the Heritage Conservation Committee so advises, the Competent Authority shall refuse permission for any sign of outdoor display structure.

Heritage byelaws/ regulations/ guidelines, if any, available with local bodies.

The Guwahati Metropolitan Development Authority has laid down several visions and goals in the Master Plan for Guwahati Metropolitan Area- 2025 (Detail of Plan with supporting documents)- Part I. They are:

a. Goal 1: To conserve Guwahati's Sensitive Natural Environment- the city has major natural features in the form of hills, water bodies (Bils) and the vast Brahmaputra River. These areas, as far as possible, are to be conserved in their pristine glory and a high quality of cleanliness in air and water are to be achieved.

b. Goal 5: to create an image befitting that of the state capital: Dipar Bil, with the large ecological green area and hills in the background, to provide new image to the state capital. Recreation and sports complexes distributed in different parts of the city. A high quality urban design corridor to be developed on the National Highway by-pass with multi-storeyed business and institutional complexes, river Development zones between Kamakhya hills and Khargeli hills and all along the river stretch in the new development area to add to the natural beauty of the city.

Open spaces:

No specific recommendation has been made in the above stated master plan for open spaces, in respect of this monument.

I. As per the Master Plan for Guwahati Metropolitan Area- 2025 (Detail of Plan with supporting documents)- Part I, the following has been mentioned:

a. In Part 7.4 it is stated that- River Brahmaputra has a vast and beautiful expanse all along it which makes it ideal for river front development. The River Development Zone has been marked in the existing area along the river. In the areas for new developments, as per CRZ III, a200 m wide green belt has been marked as recreational green. Area for the same is indicated in the land use plan. The river-front area may be developed based on a landscape plan with seating in part of the area and on the water expanse, attractive laser shows could be organized for tourists and for the local population. This can thus provide a major viewing point for the Urbasi Island.

b. In Section 11 (sub-section 11.2.3.7)- of the Comprehensive Master Plan- The River front development along the river Brahmaputra is envisaged to celebrate the beauty of the river and integrate it with the recreational green belt along it. The existing developments along the MG and DG road towards the river side shall make way for the river development zone. Also in areas on new development along the river, a 200-m wide belt is proposed to maintain the serenity of the river.

c. Growing interest in outdoor recreation, these river front developments will attract more visitors and local people, and such attractive riverfronts can thus, act as a magnet that keeps people and businesses downtown and counteracts sprawl.

II. As per the, Comprehensive Master Plan for Guwahati Metropolitan Area, 2025:

In the plan for- Area Identified for urban renewal– the South bank to the Urbasi Island is placed under "Urban Recreational Area".

In the plan for Proposed Recreational Facilities – the South bank to the Urbasi Island is placed under "City Recreational Area".

In the plan for Major City level Proposals — the South bank to the Urbasi Island is placed under "River Front Development".

Mobility within the prohibited and regulated area- roads facing, pedestrian ways, non-motorised transport, etc.

The monument is situated amidst the South bank of the Brahmaputra river, in Baruah Souk in North Guwahati. One has to reach Umananda ferry ghat by any motorised transport like bus, cars, bikes, etc. From Umananda ghat tothe monument is 1.2km for which boats are only allowed.

अनुलग्नक-IV
ANNEXURE-IV

स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा प्रदान की गई विकास योजना
Development plan as provided by the local authorities

(क) मौजूदा भूमि उपयोग मानचित्र:
(a) Exisiting Landuse Map:

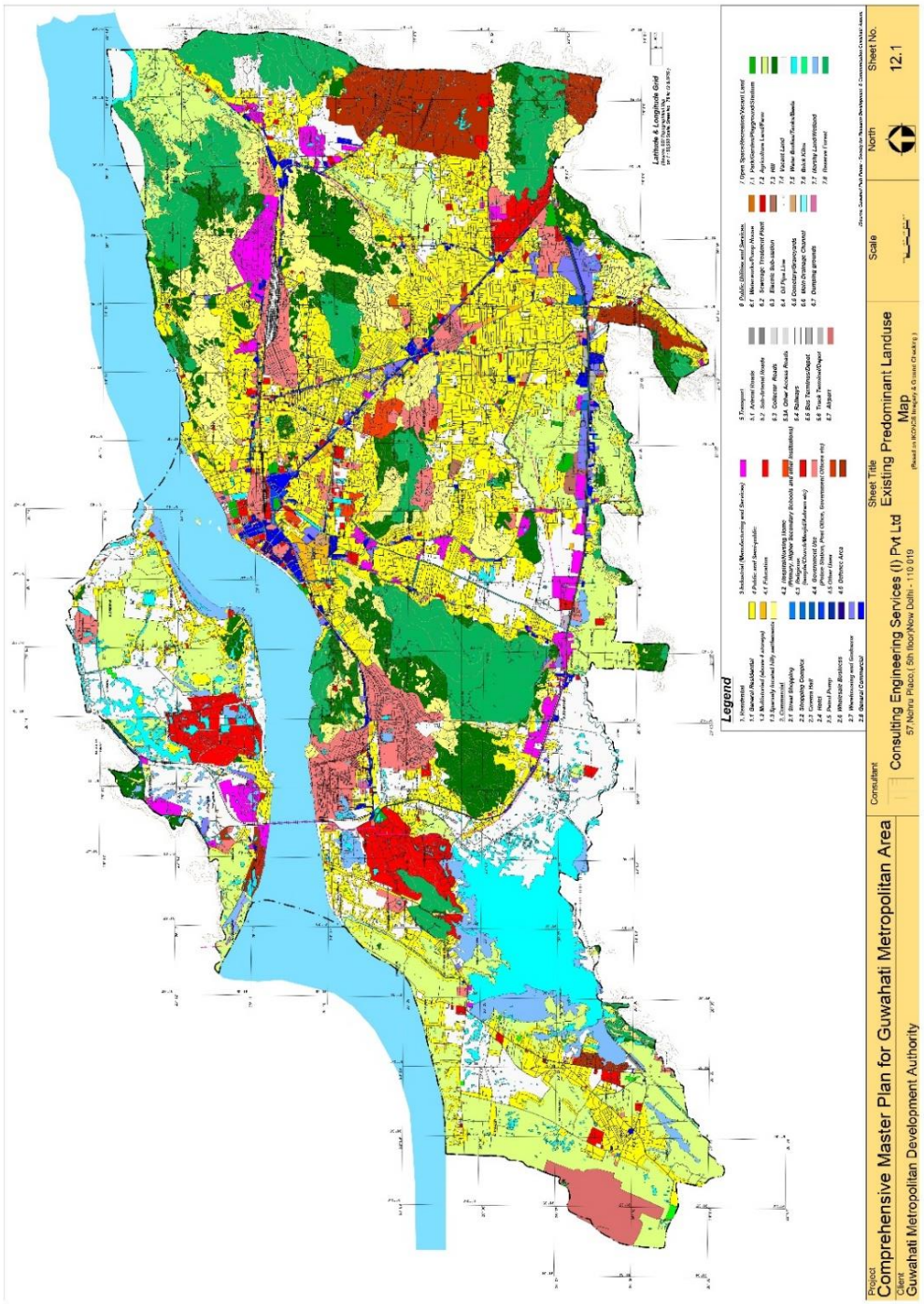

(ख) प्रस्तावित भूमि उपयोग मानचित्र:

(b) Proposed Landuse Map:

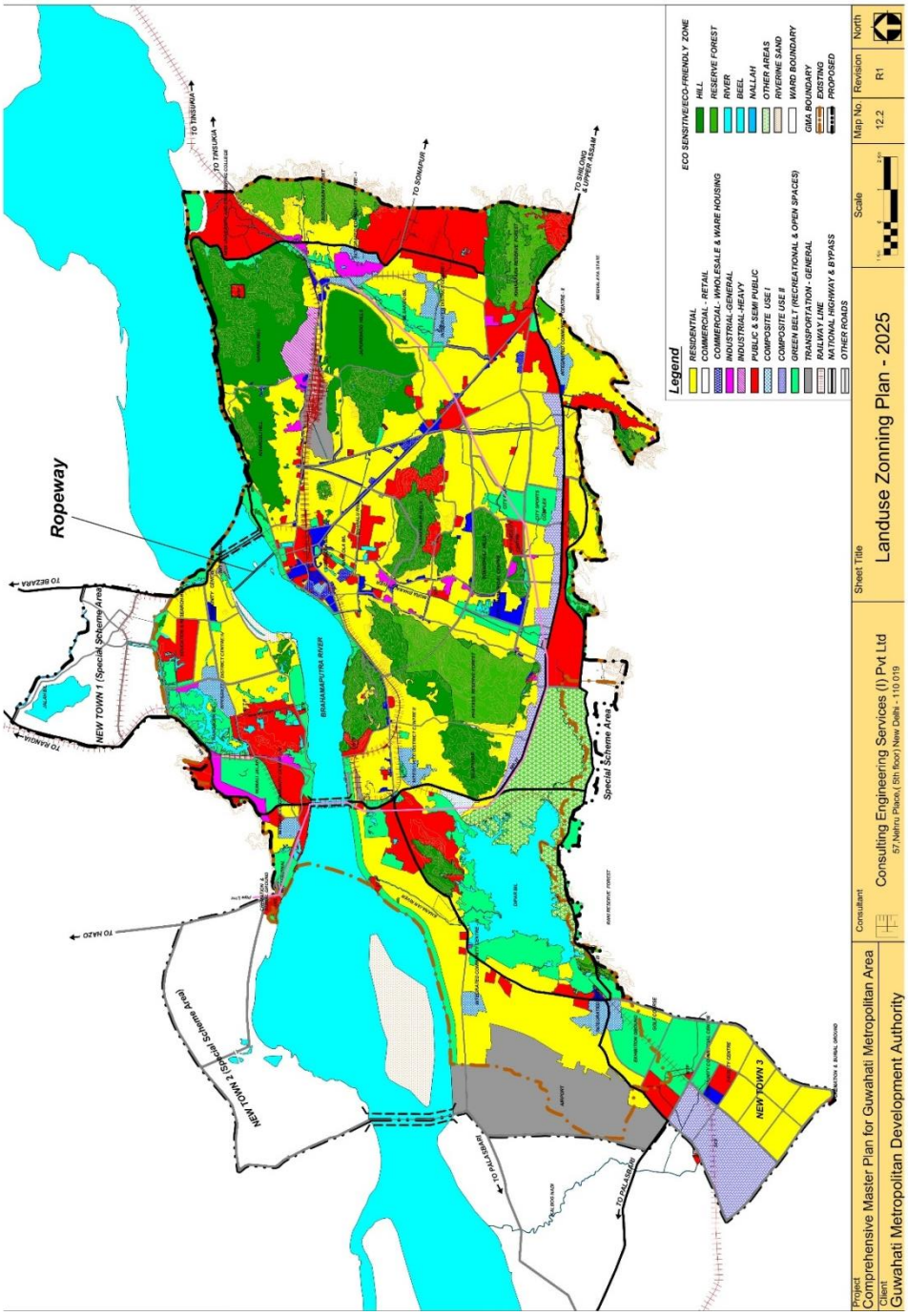

अनुलग्नक-V
ANNEXURE-V

संरक्षित संस्मारक और उसके आस-पास के चित्र
Images of the Protected Monument and its Surroundings

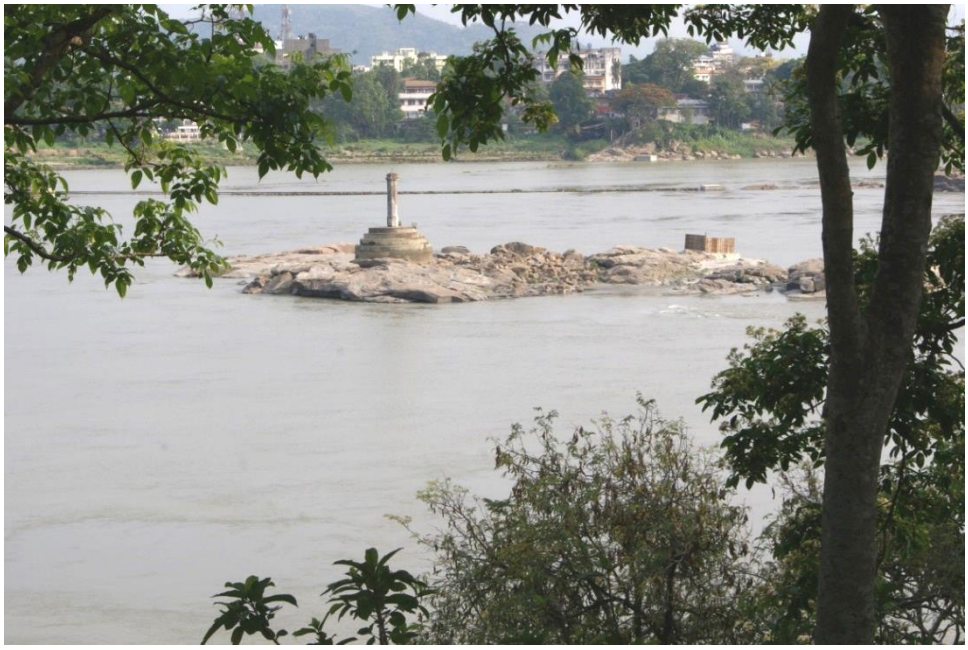

चित्र 1: उरबासी द्वीप का दृश्य
Image 1: View of Urbasi Island

चित्र 2: ब्रह्मपुत्र नदी के पानी के बीच संरक्षित संस्मारक
Image 2: The Protected Monument amidst the Brahmaputra river water

चित्र 3 और 4: नक्काशी और शिलालेखों का दृश्य
Image 3 and 4: View of Carvings and Inscriptions

चित्र 5 और 6: उरबासी द्वीप पर नक्काशी का दृश्य

Image 5 and 6: View of Carvings on the Urbasi Island

चित्र 7: रोपवे का दृश्य

Image 7: View of ropeway

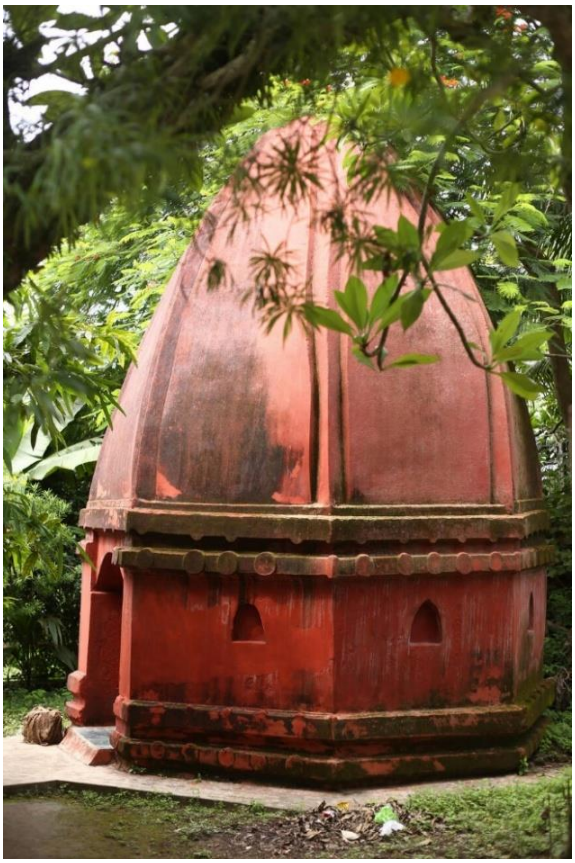

चित्र 8: उमानंद शिव मंदिर

Image 8: Umananda Shiva Temple